# नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

**स**र्व के मुक्ति, जीवन्मुक्ति दाता, परम सद्गुरु भोलेनाथ शिव के अति स्नेही, अति प्रिय संतान भाइयों और बहनों! नवयुग आगमन की शुभ वेला में, इस पुरानी दुनिया के नये वर्ष की हार्दिक बधाइयाँ हों!

अब तो उस स्वर्णिम युग के वे सुनहरे दिन नज़रों के सामने आ रहे हैं। सब आत्माओं के दिलों में जो शुभ आश है, उमंग है कि नई दुनिया आनी चाहिए वह आश शीघ्र ही पूरी होने वाली है।

वर्तमान समय सृष्टि-चक्र का अति महत्वपूर्ण समय है। हम जाते हुए कलियुग और आते हुए सतयुग की संधि पर अर्थात् संगमयुग पर खड़े हैं। भोलेनाथ भगवान शिव इस संधिकाल में अवतरित हो आधाकल्प की भक्ति के फल के रूप में ईश्वरीय ज्ञान दे रहे हैं। भगवान शिव ने ज्ञान, योग, धारणा और समय – ये चार अमूल्य खज़ाने देकर हमें मालामाल किया है। ज्ञान से आत्मा बंधनमुक्त बनती है, योग से शक्तिशाली बनती है, धारणा से कमल-सम न्यारी और सर्व की प्यारी बनती है। संगमयुग का समय अमूल्य से भी अमूल्य है। एक घंटा, एक वर्ष के बराबर है। एक घंटा व्यर्थ गँवाना माना वर्ष भर व्यर्थ गँवाना। इस युग का सेकंड-सेकंड पद्मों की कमाई जमा कराने वाला है। श्रेष्ठ और शक्तिशाली संकल्पों में रमण करना ही समय को सफल करना है।

भगवान शिव सबका दिल लेने वाले दिलाराम हैं। मनमनाभव का मंत्र सिखाकर मन को भटकने से बचाते हैं। तो संभाल रखनी है कि मन पर ईश्वर का ही राज्य रहे, बुराइयों रूपी सर्प वहाँ कुण्डली न मार ले। एक बल, एक भरोसे के आधार पर पवित्रता रूपी स्वधर्म में टिके रहें। पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है।

तो आइये, पुराने और नये वर्ष के इस संधिकाल में सर्व कमी-कमजोरियों को विदाई दे, 'सफलता जन्मसिद्ध अधिकार' के वरदान को आत्मसात् करने की कोटि-कोटि बधाइयाँ आप सब स्वीकार करें। सर्व भाई-बहनों को नये वर्ष और नये युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन,

बी.के.जानकी

## अमृत-सूची


- संजय की कलम से .....2
- गुणमूर्त ब्रह्मा बाबा *(सम्पादकीय)* ..... 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर आपके..... 7
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 9
- पुरुषोत्तम मास और ईश्वरीय सेवा में नई विधि ..... 10
- पिताश्री का नि:स्वार्थ प्यार....12
- एक ही हॉबी..... 13
- बाबा ने मुझे बनाया ..... 16
- मुहब्बत में मेहनत नहीं.....19
- बाबा बोले - तुम.....22
- मन को हर्षाने वाली यादें..... 25
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- याद आते हैं वे दिन..... 30



## सदस्यता शुल्क

| भारत | वार्षिक | आजीवन |
|---|---|---|
| ज्ञानामृत | 75 /- | 1,500/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 75/- | 1,500/- |
| **विदेश** | | |
| ज्ञानामृत | 700 /- | 7,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 700/- | 7,000/- |

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

**- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -**
**09414006904, 09414154383**

संजय की कलम से..

# मेरा सिकिलधा बाबा!

हर व्यक्ति की अपनी-अपनी जीवन कहानी है। परमात्मा पिता के साथ बच्चों की भी अलौकिक जीवन कहानी है। साकार बाबा के साथ बीते दिनों को याद करता हूँ तो गद्‌गद हो उठता हूँ। बाबा की मेरे पर बड़ी कृपादृष्टि रही, कृपा का हाथ रहा। इस आत्मा का यह सौभाग्य रहा, जिगर से कहता हूँ, बाबा ने जो प्यार इस आत्मा को दिया, वो शायद ही किसी-किसी को प्राप्त हुआ हो। बाबा ने ज्ञान के बहुत साक्षात्कार कराए, ज्ञान के भी साक्षात्कार होते हैं। जैसे दिव्य दृष्टि में हम कई चीज़ें देखते हैं, वैसे ही दिव्य बुद्धि से भी बहुत-से साक्षात्कार होते हैं। इस आत्मा को कितनी ही बार वो साक्षात्कार समय-समय पर हुए हैं। बापदादा ने जो वरदान दिए और उनके साथ जो हमने क्षण, घंटे, दिन, वर्ष गुज़ारे वे अविस्मरणीय हैं। कई बार लगता है, उनका वर्णन करें तो उनसे बाप की ही प्रत्यक्षता है। कई बार ऐसा भी लगता है कि उनमें व्यक्तिगत बातें भी हैं, फिर मन में एक रुकावट आती है कि उनको लिखने का कोई लाभ नहीं है। लेकिन वो यादें तो आती ही हैं कि किस तरह बाबा ने हमें अकेले में बिठाकर काफी-काफी समय तक योग का अभ्यास कराया। साहित्य की वजह से उनसे ज्ञान के विषय में जब चर्चा होती थी तो ज्ञान की गहराई में जाने का भी मौका मिलता था। जब कोई बात लिखकर उनके सामने ले जाते थे, कई शब्दों पर किस प्रकार चर्चा होती थी, सर्विस के बारे में बाबा क्या इशारे देते थे, कौन-सी बातें मुख्य रूप से उनके सामने रहती थीं, जब हम खेलते थे, तब कैसा बाबा का रूप रहता था, ये सब विभिन्न चरित्र हैं बाबा के।

कुछ भाई लोगों ने एक प्रश्न पूछा, जो शरीर से पुरुष हैं, उन्हें कैसे भगवान के साथ सजनी के संबंध का अनुभव हो सकता है? हो सकता है, इस आत्मा को भगवान के साथ सर्व संबंध अनुभव करने का सौभाग्य मिला। माता के साथ, पिता के साथ, सखा के साथ – जो उसके साथ सर्व संबंध गाए गए हैं, उन सबका आध्यात्मिक रूप से अनुभव करने का मौका मिला। एक दफा नहीं, कई दफा। गीता पढ़ते हैं तो अंत में आता है, इस ज्ञान को पुन: पुन: स्मरण करके मेरा मन गद्‌गद होता है। तो वो अनुभव भी जब पुन: पुन: हमारे सामने आते हैं तो मन गद्‌गद होता है।

मैंने, भक्तिमार्ग के माध्यम से परमात्मा को खोजने के लिए, जो मेरे से हो सकता था, किया। मैं हर दिन

प्रात: दो बजे उठकर, नहा-धोकर भक्ति किया करता था। शायद ही किसी धर्म का कोई मुख्य शास्त्र हो जो मैंने ना पढ़ा हो। शायद ही किसी धर्म का कोई प्रमुख नेता हो, जिसके साथ मैंने वार्तालाप न किया हो। किसी भी प्रकार की कोई भी साधना किसी ने बताई – हठयोग, तंत्र, मंत्र, यज्ञ, हवन, माला, जाप, तीर्थयात्रा, वेद, पुराण, शास्त्र, चर्च-मस्जिद – कोई भी बात ऐसी नहीं जो हमने ना की हो। एक खोज थी, कसक थी कि इसी जीवन में परमात्मा को पाना है। बहुत बार टचिंग हुई, थोड़ा-थोड़ा अनुभव भी हुआ, घरवालों को बिना बताए मैं हैदराबाद भी गया, इसलिए कि कोई मुझे खींच रहा था। मैंने ओममण्डली की चर्चा अपने बड़े भाई से करने की कोशिश की। ऐसे अनुभव बहुत हुए कि बाबा हमें खींच रहा है, हमारी तैयारी करा रहा है किसी विशेष सेवा

के लिए पर स्पष्ट पता नहीं था। जैसे बाबा कहता है, मेरे सिकिलधे बच्चे, मेरे भी जिगर से निकलता है, सिकिलधा बाबा। मैंने भी उसको बहुत सिक से पाया है। कितनी मेहनत मुझे शिव बाबा को प्राप्त करने के लिए करनी पड़ी। मेरे जिगर से निकलता है, वो मेरा सिकिलधा पिता है, सिकिलधी माँ है, मुझ आत्मा के, उनके साथ सर्व संबंध हैं। जब मैं आया, बाबा का प्यार मुझसे कितना था! हालांकि कई पुराने भाई-बहनें थे परंतु वे भी जानते हैं कि बाबा का मुझ पर कितना स्नेह था।

बाबा का मुझमें जो विश्वास था या जो हमारा बाबा में था, मैं समझता हूँ वह अभिन्न प्रकार का था। जब मैं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आया तो यहाँ समर्पण की कोई परंपरा नहीं थी। सिन्ध में जो भाई-बहनें समर्पित हुए थे, उस समय परिस्थितियाँ और थीं। लोगों ने विरोध किया था, उन पर अत्याचार हुए थे, उन्हें ज्ञान सुनने की इजाज़त नहीं दी गई थी, उन पर बंधन डाले गए थे, इस वजह से कुछ भाई-बहनें समर्पित किये गये थे और बाबा ने कन्याओं को शिक्षा देने के लिए हॉस्टल बनाया था।

जब पहले-पहले मैंने अपने को ऑफर किया कि जीवन का लक्ष्य मुझे मिल गया, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ तो मुझे भी कहा गया कि किसलिए समर्पित होना चाहते हो। तो मेरे समर्पण से नया सिलसिला शुरू हुआ, इससे पहले बहनों-भाइयों के समर्पण का कोई प्रावधान नहीं था। फिर बाबा ने भी बहुत प्यार से मुझे उठाया, सर्विस दी, दिशानिर्देश दिये।

उन दिनों मैं देहली में था, वहाँ तीन पोस्ट आती थीं। हर पोस्ट में मुझे तीन-तीन पत्र आते थे। एक पत्र लिखकर बाबा जब लिफाफा बंद करा देते तो ईशू बहन को कहते, फिर चिट्ठी लिखनी है, इसके बाद तीसरी भी लिखाते। एक पोस्ट में तीन पत्र होते। इस प्रकार, तीन बार की पोस्ट में आठ-आठ या नौ-नौ पत्र हमें आते। ऐसा प्यार मैंने बाबा का पाया है। बाबा के साथ महीनों बैठकर ज्ञान की चर्चा करने का, योग का अभ्यास करने का तथा सेवा के दिशानिर्देश लेने का भी मौका बना है।

बहुतों को याद होगा, जब मैं बाबा के पास जाता था, बाबा सबको हटा देते थे, कहते थे, जगदीश बच्चा आया है। बाबा कहते, जब तुम आते हो, शिवबाबा इसमें आता है। जब बाबा ऐसे कहते, मेरा भी ध्यान जाता कि बापदादा दोनों हैं। बाबा कहते, आप डायरेक्शन लेने आते हो, ज्ञान की कोई चर्चा करने आते हो तो उसको बताने के लिए शिवबाबा ब्रह्मा तन में प्रवेश करता है। मैं भी उसी स्थिति में बाबा के सामने बैठता कि शिवबाबा, ब्रह्मा के तन में है और उस अव्यक्त स्थिति में, फ़रिश्ता स्थिति में बापदादा मेरे सामने बैठे हैं। हम दोनों लाइट से घिरे हुए हैं और मन की ऊँची स्टेज है। योग जैसी अवस्था में बैठकर हम बातें करते। कोई आता, जाता उसका कोई भान न रहता। मन बहुत गद्‌गद रहता। खुशी होती कि जो हमने मेहनत की है उसका बापदादा ने हमको फल दिया है। हमारे पर उनकी अतिरिक्त कृपा है।

मुझे भरतपुर तथा कोटा हाऊस में रहने का भी मौका मिला। मैं अकेला रहता था, बाबा ने मुझे अकेली जगह दी हुई थी कि इसका मंथन का कार्य है और इसके साथ कोई और नहीं रहना चाहिए। इस बच्चे का कमरा अकेला हो, जगह भी अकेली हो। कई बार तो बाबा कहते, देखो, उधर पहाड़ियों में गुफा है, तुम वहाँ चले जाया करो। दोपहर, शाम को मैं कई बार चला भी जाता। मैंने पहाड़ी का भी बहुत अच्छा लाभ लिया है। बाबा ने ज्ञान-योग आदि सब तरह से बहुत कुछ दिया है। इस आत्मा पर बाबा की छाप लगी हुई है। कठिन से कठिन समस्या आती जैसे कि झगड़ा, विरोध, सामना तो बाबा का पत्र, फोन या आदेश आता कि जगदीश को भेज दो। बाबा का कितना विश्वास था! मदद तो बाबा की होती है पर करने वाले का नाम और कल्याण हो जाता है। करते तो बाबा हैं क्योंकि करन-करावनहार वे ही हैं पर निमित्त बनने से आत्मा का सौभाग्य बन जाता है। ❖

सम्पादकीय ..✍

# गुणमूर्त ब्रह्मा बाबा

ब्रह्मा बाबा अपने लौकिक जीवन में खिदरपुर के बादशाह के रूप में प्रसिद्ध थे। उनके घर पर चार-चार सेविकाएँ थीं और भारत भर में कई स्थानों पर उनका हीरे-जवाहरात का व्यापार चलता था। अनेक सहयोगियों, नौकरों और संयुक्त परिवार के बीच रहते वे सबके प्रिय भी थे, सबके आदर्श भी और सर्व के मार्गदर्शक भी। ऊँची कमाई वाला धंधा होते भी सच्चाई और ईमानदारी, धनी होते हुए भी धन के दुरुपयोग से मुक्त, समाज के उच्च वर्ग में सम्मानित होते हुए भी अहम भाव से मुक्त, पुरुष प्रधान समाज में रहते हुए भी नारी को प्रधानता देने वाले – ये उनके चरित्र की चादर में जड़े हुए हीरे समान मूल्य थे।

सन् 1936-37 में जब उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुए और परमात्मा शिव की उनके तन में प्रवेशता हुई तो उन्होंने अपना सब कुछ माताओं-बहनों के आगे समर्पित कर दिया। इसके बाद स्वयं पैसे को हाथ नहीं लगाया और चौदह वर्षों तक समर्पित हुए चार सौ बच्चों की पालना उसी पैसे से करते रहे। धन-वैभव और साधनों के प्रति पूर्ण अनासक्ति के साथ-साथ उनका एक मुख्य गुण जोकि उनके व्यक्तित्व में सदा झलकता रहता, उनके चारों ओर पवित्रता बिखेरता रहता और लोगों के जीवन को पलट देता रहा, वह था – आत्मिक दृष्टिकोण। बाबा स्वयं आत्म-स्थिति में रहते हुए, सब देहों में आत्मा ही को देखते। बाबा की क्लास (ज्ञान-सभा) में छोटे बच्चे भी बैठे होते, बूढ़े भी उपस्थित होते, ग्रामीण भी होते और बड़े-बड़े नगरों में ठाठ-बाट से रहने वाले व्यक्ति भी विराजमान होते। परंतु बाबा सबको आत्मिक दृष्टि से देखते। यदि किसी अन्य उच्च वक्ता की सभा में छोटी आयु वाले बच्चे बैठे हों तो वह मन में सोचेगा कि ये बच्चे भला मेरी गहरी बातों को क्या समझेंगे अथवा ये अत्यंत वृद्ध आयु वाले शक्तिहीन व्यक्ति मेरी इन अनमोल बातों को सुनकर क्या करेंगे? परन्तु बाबा तो यही देखते कि ये भी आत्माएँ हैं। किसी की कर्मेन्द्रियाँ रूपी उपकरण अविकसित हैं, किसी के जर्जरीभूत, परंतु इन आत्माओं का भी येन-केन-प्रकारेण कल्याण तो करना ही है। अत: वे ऐसे सरल, स्पष्ट, सुबोध और सरस तरीके से अत्यंत उच्च आध्यात्मिक सत्यों को दर्शाते कि बालक, वृद्ध, सभी उनको भली-भाँति समझकर कल्याण के भागी बनें, तभी तो वे सभा के बाद छोटे व बड़े, हरेक शरीरधारी आत्मा से अलग बैठ करके भी उसे ज्ञान-धन से लाभान्वित करते, उसे पितृवत स्नेह देते, उसके मन की उलझनों को दूर करते, उसे आत्मा तथा परमात्मा का बार-बार परिचय देते, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का हाल सुनाते और उसे यथायोग्य ईश्वरीय सेवा में लगाकर आत्मिक स्थिति में स्थित कर देते।

### दिखाई देती बाबा की भृकुटी में दिव्य ज्योति

बाबा की आत्मिक स्थिति इतनी तो उच्च और प्रभावशाली थी कि उनके पास बैठे हुए वत्स प्राय: ऐसा महसूस करते कि वे अपनी देह से न्यारे हो रहे हैं। वे भार-शून्यता अथवा हल्कापन अनुभव करते और उनके मन में अशुद्ध संकल्प शान्त हो जाते। उस समय वे शुद्ध पुरुषार्थ एवं आध्यात्मिक जीवन के लिए प्रेरित होते और उन्हें अपनी अवस्था की उच्चता में कमी खटकने लगती तथा पावन बनने की अन्त: प्रेरणा मिलती। बहुत-से पुरुषार्थियों को तो कई बार कुछ समय के लिए इस संसार का अनुभव न रहता बल्कि उनके नेत्र मानो दिव्य-दृष्टि से युक्त होकर बाबा के चारों ओर दिव्य आभा अथवा श्वेत अव्यक्त प्रकाश को देखते और उस समय का अलौकिक अनुभव उन्हें इतना भाता कि उनका मन चाहता कि बस, इस अवस्था का, इसी आत्मिक सुख का हम रस लेते

ही रहें। उन्हें बाबा की भ्रकुटि में एक दिव्य ज्योति प्रकाशमान दिखाई देती और वे एक ऐसे आत्मिक सुख तथा सच्ची शान्ति का अनुभव करते कि बस, उसी में टिके रहना चाहते। किन्हीं के मन में कोई प्रश्न होते तो उनका उत्तर उनके अंतर्मन में उन्हें मिल जाता। वे बाबा के आध्यात्मिक प्रभाव से अभूतपूर्व स्नेह और सुख अनुभव करते। जो दुखी और चिन्तित अवस्था में बाबा से मिलने आता, वह मुस्कराता हुआ और शान्त होकर लौटता। प्राय: लोगों को ऐसा लगता कि वे (आत्मा) जिस पिता को जन्म-जन्मान्तर से ढूँढ़ रहे थे, वह उन्हें मिल गया है।

### सबके शुभचिन्तक

बाबा कभी भी किसी का अशुभ या अमंगल नहीं सोचते। दूसरों को भी वे सदा यही शिक्षा देते कि न किसी के अकल्याण की बात सोचो और न कभी मुख से अशुभ बोलो। वे यह भी कहते कि जिस-किसी भी जिज्ञासु को आप ईश्वरीय ज्ञान सुनाने लगते हैं, उसके लिए भी पहले मन-ही-मन शिव बाबा को याद करके कहो – ''शिव बाबा! यह भी किसी तरह समझ जाये, इसकी भी अन्तरात्मा के कपाट खुल जायें और इसका भी कल्याण हो जाये, और फिर जब आप योग में बैठें तो उस अवस्था में उस व्यक्ति को भी अपनी अंतर्दृष्टि के सामने लाकर, उसे भी योग का दान दें ताकि उसका मन निर्मल हो जाये और ईश्वरीय ज्ञान का बीज उसमें अंकुरित हो।'' देखिये तो, साकार ब्रह्मा बाबा किस पराकाष्ठा तक सभी के शुभचिन्तक थे! बाबा कहते कि हमें अपकारी पर भी उपकार करना है और जो हमारी निन्दा करता है उसे भी अपना मित्र समझना है। वे कहते कि किसी के प्रति शुभचिन्ता का सबसे श्रेष्ठ रूप यह है कि हम उसकी बुरी आदतों को सुधार दें और उसका योग परमपिता परमात्मा से जुटा दें।

### अपार उत्साह और अदम्य हिम्मत

बहुत कोशिश करने पर भी यदि कोई कार्य संपन्न न होता तो भी अंतिम क्षण तक बाबा उसके लिये पूरा प्रयत्न करते तथा कराते रहते। पुरुषार्थ की चरम सीमा देखनी हो और हिम्मत तथा उत्साह की पराकाष्ठा जाननी हो तो ये दोनों पिताश्री अर्थात् साकार ब्रह्मा बाबा के जीवन में सदा स्पष्ट मिलते। कभी भी किसी ने उनमें उत्साह की कमी, पुरुषार्थ के प्रति उदासीनता या हारी हुई हिम्मत या आलस्य को नहीं देखा होगा। उन्हें कोई भी कार्य अधूरा छोड़ना, अपूर्ण रीति से करना अथवा बिना कोई परिणाम निकाले उसे छोड़ देना, अच्छा नहीं लगता था। वे हरेक कार्य को द्रुत गति से परंतु सोच-समझकर और योगयुक्त होकर करने के लिए कहते और वे स्वयं इस विषय में आदर्श थे। पूरा पुरुषार्थ करने के बाद जैसा भी परिणाम होता उसे वे 'भावी' या 'ड्रामा' कहकर सदा प्रसन्न रहते तथा उसी में कल्याण मानते। वे गतकाल के वृत्तांत से शिक्षा लेकर, नि:संकल्प होकर आगे बढ़ने को कहते। अत: वे बार-बार किसी कार्य के पीछे वत्सों को लगाकर भी उन्हें हिम्मतवान बनाते हुए सफलता तक लाने में तत्पर रहते। ऐसे अथक पुरुषार्थ करने के कारण ही तो वे 'भगीरथ' अर्थात् परमपिता परमात्मा के भाग्यशाली रथ (माध्यम) बने और ज्ञान-गंगा को लाने के निमित्त बने।

### स्वयं मेहनत करके दूसरों को प्रेरणा देना

बाबा यज्ञ के स्थूल कार्य भी पहले स्वयं करने लग पड़ते। दूसरों को कहने की बजाय वे स्वयं करने लग जाते। इतनी वृद्ध आयु में उन्हें स्थूल-से-स्थूल कार्य में लगे देखकर अन्य लोग दौड़ कर उस कार्य को करने लगते। वे कहते – ''बाबा! यह तो हम युवा-वर्ग वालों का कार्य है। बाबा, आप ऐसे स्थूल कार्य क्यों करते हो?'' तब बाबा कहते – **''इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवा बड़ी मधुर और प्यारी लगती है। यह मन को बहुत भाती है। बच्चे! सारे कल्प में एक ही बार तो शिव बाबा यह सर्वोत्तम ज्ञान-यज्ञ रचते हैं, उसके लिए वे इस वृद्ध तन में आते हैं, तो क्या इस तन को 'वृद्ध' देख कर मैं**

**कल्प-कल्पांतर स्थूल सेवा ही न करूँ? मैं भी तो शिव बाबा का स्टूडेन्ट (विद्यार्थी) हूँ। यदि मैं इस शरीर से कोई कार्य नहीं करूँगा तो मुझे कैसे निरोगी व कंचन काया मिलेगी? बच्चे, सर्विस करने की हिर्स (लालसा) तो होनी चाहिए। दधीचि ऋषि के समान इस यज्ञ की सफलता के लिये अपनी हड्डियाँ भी दे देनी हैं तभी तो शरीर पावन बनेगा। हम ब्राह्मणों का यह सेवा का जीवन कैसा सुहावना है! ऐसा अवसर तो सारे कल्प में फिर कभी मिलता ही नहीं। जबकि शिव बाबा ही कहते हैं कि मैं आप बच्चों का फ़रमाँबरदार सेवक हूँ तो मैं भी आप बच्चों का सेवाधारी हूँ।''** इस प्रकार के वचन जब बाबा बोलते और स्वयं भी सेवा में जुटे रहते तो सोचिये कि किसके मन को कार्यरत होने के लिए प्रेरणा नहीं मिलती होगी; रात्रि की क्लास में भी बाबा प्राय: पूछा करते – ''लाडले बच्चो! बताओ और कोई सेवा है बाबा के लिये? यह बाप भले ही ऊँचा बनाने वाला है परंतु फिर भी बच्चों का गुलाम है।''

बाबा सदा यही शिक्षा देते कि यथासंभव अपना कार्य स्वयं करो ताकि आप पर कर्मों का बोझ न चढ़े।

### खुशी में लाना और हल्का करना

बाबा सदा खुशी में रहते और सदा ऐसी ही बातें सुनाते कि कोई मनुष्य कितना भी अशान्त क्यों न हो, चाहे कितनी भी उलझनों में पड़ा हुआ हो, बाबा की मधुर मुस्कान को देखते ही उसकी उदासी और चिन्ता भाग जाती और उसकी खुशी का पारा चढ़ जाता। किसी ने भी आज तक बाबा के चेहरे पर चिन्ता या उदासी की रेखा नहीं देखी। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना के समय से लेकर अंत तक न जाने कितने विघ्न, विरोध, आपदायें और तूफान आये परंतु बाबा सदा कहते – ''बच्चे, सत्य की बेड़ी डोलेगी परंतु डूबेगी नहीं। बच्चे, कल्प पहले भी यह हुआ था, यह कोई नई बात नहीं है; सच्चाई की स्थापना करने वालों के सामने ऐसा होता ही है।''

बाबा कहते – '' बच्चे, आप ही पवित्र रहने वाले सच्चे ब्रह्मा कुलभूषण हो। अत: आप पद्मापद्म भाग्यशाली हो। '' इस प्रकार, बाबा बच्चों को सदा खुशी और उल्लास में लाते रहते और कहते – ''बच्चे! माया के विघ्न तो बहुत ही आयेंगे, संबंधियों या लोगों की ओर से विरोध भी होगा, बहुत तूफान भी आयेंगे परंतु घबराना नहीं और हिम्मत मत हारना। जबकि आपने शिवबाबा को हाथ दिया है तो आपका अकल्याण नहीं हो सकता। अब आपकी 'चढ़ती कला' है, इसलिये सदा यह सोचते हुए चलो कि सर्व-समर्थ शिव बाबा हमारे साथ है। ऐसा निश्चय रखने वाले निश्चयात्मा की विजय होती है। आप मनोविकारों पर विजय पाने का पुरुषार्थ करने वाले 'विजयी रत्न' हो, विजय का तिलक तो आपके माथे पर मानो लगा ही हुआ है। बस, आप इतना करना कि घबराना नहीं, थकना नहीं और रुकना नहीं, ग़फ़लत मत करना और आलस्य मत करना, बल्कि जो राह अब शिव बाबा दिखा रहे हैं, उस पर चलते रहना।'' इस प्रकार बाबा विघ्नों को 'ऊँचे पद की निशानी', परीक्षाओं को 'उच्च पुरुषार्थ की प्रतिक्रिया', बड़े तूफानों को 'ऊँची मंज़िल के नज़दीक पहुँचने का चिह्न' बताकर सदा यही कहते कि – 'बच्चे! ये सब अन्तिम सलाम करने आये हैं। बस, ईश्वर के सदके (प्रेम में) इनको पार करो तो आपके कदम-कदम में पद्मापद्म की कमाई होगी।' बाबा कहते कि सच्ची खुशी तभी होगी जब विकर्म करना बंद करोगे और आत्मिक स्मृति तथा ईश्वरीय स्मृति में स्थित होवोगे। उस अवस्था में खुशी का पारावार नहीं रहेगा। इन युक्तियों से बाबा नित्य-प्रति सबको खुशी का प्याला पिलाते हुए उनमें नया दम, नया जोश भरते हुए, उन्हें ऐसे तो ले चलते रहते कि मनुष्य को सब अशुद्ध संकल्प भूल जाते, समस्याएँ हल्की मालूम होतीं और मनोविकार उनसे सहज ही छूट जाते।

**– ब्र.कु. आत्म प्रकाश**

# प्रश्न हमारे, उत्तर आपके

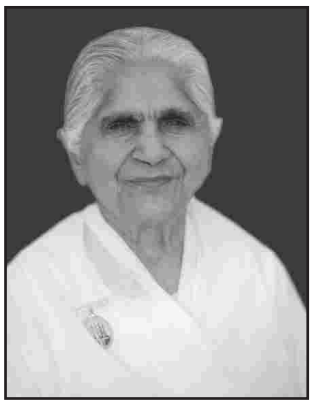

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

**प्रश्न : कर्म का फल तो जरूर मिलता ही है लेकिन भगवान का प्यार ऐसा है जो किये हुए कर्म को माफ कर सकता है। मैंने भगवान को कहा कि मुझे माफ कीजिये परंतु अभी तक भी नहीं किया है, तो इतना समय क्यों लगाया है?**

**उत्तर :** पाप इंसान करता है तो भगवान भी क्या करे। किया है, भोगना पड़ेगा। जिसके साथ किया है, वो भी ऐसे छोड़ेगा नहीं। तो अपने लिए भी जैसे दुश्मन पैदा कर लिया। भले ही झूठ बोलेगा, मैंने नहीं किया परन्तु कर्म करके सज़ा अपने लिए फिक्स कर ली। भगवान सज़ा नहीं देता है, अपने कर्म से अपनी सज़ा आपेही फिक्स करते हैं। अगर अच्छा करते हैं तो अपने लिए अच्छा आपेही बना लेते हैं। भगवान के प्यार की शक्ति चाहे क्षमा करने में, चाहे कर्म करने में तब मिलती है जब हम सच्चे होते हैं। अनुभव कहता है कि पहले मनुष्य में रियलाइज़ेशन चाहिए कि मैंने रांग किया है। दूसरे को दोषी न बनाये। भले दूसरों का भी दोष होगा पर रियलाइज़ेशन के समय उसका बहाना न देवे। रियलाइज़ेशन से फिर पश्चाताप होवे। पश्चाताप ऐसा हो जो फिर से वह गलती न हो। मैं भगवान के आगे कहती हूँ कि मैंने यह पाप किया है, भले दूसरा कहे कि इसने नहीं किया मगर मैं कहती हूँ, भगवान मैंने किया है। सजा भोगने की बजाय मैं रोकर भी भगवान से क्षमा माँगूँ। पाप करने की अंदर से रियलाइज़ेशन की है तो भगवान कहता है कि एक पाप के बदले सौ पुण्य करो, तब माफ हो जायेंगे, यह मेरा अनुभव है। जिसके साथ किया है, वह भी कहेगा, शायद मेरा भी कड़ा हिसाब-किताब था, इसे माफ करो।

जो ऐसा करते हैं, भगवान उनको दिल से क्षमा देता है। फिर दिल को लगता है कि भगवान ने हमें माफ किया है। अगर सूक्ष्म में हम दूसरे को दोषी बनाते रहेंगे तो पूरी क्षमा भगवान से नहीं ले सकेंगे। अपने बुरे कर्मों के कारण अंदर थोड़ा दुखी, निराश हो जायेंगे तो भी क्षमा नहीं ले सकेंगे। कई ऐसे होते हैं जो दुखी होकर समय गंवाते हैं। दुखी नहीं होना है लेकिन अंदर से यह समझना है कि जिस कारण से मैं दुखी हो रही हूँ उस कारण को दूर करूँ। भगवान पर इतना विश्वास करूँ जो विश्वास मेरे को बल देवे। वो बल पाप नाश करता है और अंदर से दुख दूर कर देता है। भगवान कहेगा, अच्छा तुम भूल जाओ, छूट जाओ। अगर अच्छा करने की हमारी भावना है तो भगवान शक्ति देता है कि बच्चे भले करो। तुमको मदद मैं करूंगा। भगवान के आगे मैं इच्छा रखती हूँ कि भगवान मेरे को निमित्त बनाकर कुछ कराओ।

**प्रश्न : क्या अच्छे कर्म की यह फिलॉसाफी है कि हम देते जायें, बदले में कुछ भी लेने का भाव न रखें?**

**उत्तर :** तुम देते जाओ, गिनती क्यों करते हो। सच्ची दिल, साफ दिल, खुली दिल वाला कभी गिनती नहीं करता। पाप कभी गिनती करते हैं

क्या, जो पुण्य की गिनती करते हो। पापों की गिनती करो। पाप एक भी हो गया तो उसकी गिनती करो, पुण्य सौ भी गिनती मत करो। जब सौ पुण्य करेंगे तो पास्ट के पाप नाश होंगे। अभी मेरे से कोई पाप ना हो।

**प्रश्न : भगवान के सामने सच का क्या महत्त्व है?**

**उत्तर :** भगवान की तो बात छोड़ो, लेकिन अगर कोई सच बोलता है तो इंसान को भी वह अच्छा लगता है। झूठ बोलने वाले पर इंसान को भी गुस्सा आता है। कई मां-बाप होते हैं, बच्चा अगर बुरा करके सच बताता है तो उसे छोड़ देते हैं, झूठ बोलता है तो गुस्सा आता है। हम भगवान के बच्चे हैं, झूठ क्यों बोलें, चोरी क्यों करें, ठगी क्यों करें, किसी की निंदा क्यों करें। निंदा करने से कितना पाप करते हैं, कितनी खराब हमारी आदत हो जाती है! अच्छाई किसी की नहीं देखते हैं, ईर्ष्या-द्वेष की जेल में पड़े रहते हैं तो यह भगवान के बच्चों का काम थोड़े ही है।

**प्रश्न : जब हम अच्छा काम करते हैं तो कहते हैं, भगवान हमारे साथ हैं लेकिन जब हम बुरा काम करते हैं तो क्या हम अकेले करते हैं?**

**उत्तर :** मनुष्य आत्मा को बुद्धि है। वह बुद्धि समझ सकती है कि बुरा क्या है और अच्छा क्या है। अगर कोई इंसान बुरा कर्म संग से करता है, अज्ञानता से करता है, विकारों के वश करता है तो भगवान साथ कैसे देगा? पहले अपने से पूछो, बुरा करते क्यों हैं? आदत कराती है। संग कराता है। दुनिया को देखकर करते हैं। विवेक नहीं भी मानता है, डर भी लगता है फिर भी करते हैं। यह हाथ चोरी भी करता है तो दान भी करता है। दान देकर खुश रहता है, चोरी करके डर लगता है कि किसी ने देख तो नहीं लिया। दान गुप्त किया, उसमें डर नहीं लगा परन्तु छिपकर जो चोरी की, उसमें डर लगा। सच बोलने में खुशी होती है। झूठ बोलने में डर लगता है क्योंकि एक झूठ के साथ सौ झूठ बोलने पड़ेंगे। अगर मैं सच्ची हूँ तो भरी सभा के बीच भी आ सकती हूँ। बुद्धि कहती है, तुम सच कहो। सच्चे कर्म करने वाला भगवान से कहेगा, भगवान मुझे और साथ दो, मैं आपके लिए और अच्छे कर्म करूँ। हमने कभी भगवान से मदद मांगी नहीं, कभी नहीं मांगी। उसने कहा, तू हिम्मत रख, मदद अंदर है ही है। हिम्मत नहीं रखेंगे और केवल मदद माँगेंगे तो बेगर कहलायेंगे। हिम्मत और मदद के आधार से, भगवान अपने आप साथी बनकर मदद करता है। उसे अच्छा लगता है साथ देना।

**प्रश्न : जब दो आत्माओं का लंबे समय से संघर्ष चल रहा है तो क्या दोनों का अलग-अलग होना ही समाधान है? अगर अलग-अलग ना हों तो क्या करें?**

**उत्तर :** ज्ञान मार्ग में किस समय क्या निर्णय करें, वह सहज युक्ति आ जाती है। पास्ट के संस्कार आपस में टक्कर खाते हैं। पहले किसको पता नहीं चलता है कि हमारा आपस में ऐसा कोई संबंध होगा, पीछे जैसे-जैसे संबंध आगे बढ़ता जाता है तो पुराने संस्कार प्रकट होते जाते हैं। उस समय जिसको ज्ञान आता है, उसे अपने आपको मोल्ड करना चाहिए अथवा धीरज रखना चाहिए। जान जाते हैं, यह पूर्व का हिसाब-किताब है। उसको टक्कर खाकर कड़ा नहीं बनाना है, हलका करना है ताकि धीरज, प्रेम और शांति से वह चुक्तू हो जाये। ऐसा भी हो सकता है कि चुक्तू होने के बाद संबंध मीठा हो जाये। मुझे ऐसा बहुत अनुभव है। बढ़ायें नहीं, आप गुस्सा करें और मैं भी गुस्सा करूँ या आप गुस्सा करें और मैं दुखी हो जाऊँ तो भी बढ़ गया। अगर मैं दुखी होती रहूँगी तो आपका गुस्सा नहीं जायेगा। तो मैं दुखी ना रहूँ, शांति की शक्ति अपने पास रखूँ, इससे दूसरी आत्माओं का गुस्सा ठंडा होता जायेगा। भले ही वे आग जैसा गुस्सा करें पर मैं ठंडे पानी जैसा काम करूँ। तो वे आत्माएँ बदल जाती हैं। संबंध-विच्छेद करना कायरता है। शांति, धैर्य, स्नेह बहुत काम करते हैं, करके देखो। जो संभव नहीं है वो भी संभव हो जाता है।

# 'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका बड़ी अनोखी, ज्ञान के अमृत जैसी लगती है। अगस्त 2009 अंक बहुत अच्छा लगा। 'कर्मों का साक्षात्कार' लघु नाटिका ने अंतरात्मा को छूने का काम किया। एक बार नहीं तीन-तीन बार पढ़ चुका हूँ और सपंर्क में आने वाले लोगों को भी पढ़कर सुनाया। ऐसे लेख प्रकाशित करने से बहुत लोगों को सच्चाई से अर्जन करने और उसे मानव कल्याण में लगाने की प्रेरणा मिल जायेगी। मैं नेपाली हूँ, हिन्दी भाषा बहुत मीठी लगती है।

**– लोकनाथ रेग्मी, नेपाल**

---

मैं आदिवासियों के बीच रहकर काम करने वाली पूर्णकालिक समाजसेविका हूँ, जहाँ डाक विभाग नहीं के बराबर है, 'ज्ञानामृत' भी दुर्लभ है। अभी कुछ प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। अगस्त-सितंबर 09 अंकों के जो बिन्दु अच्छे लगे, लिख रही हूँ –

1. पहले 'क' फिर 'ख'। 'क' से कमाओ, 'ख' से खाओ। कमाई = कम आई।

2. हर घंटे एक गिलास पानी पीना जैसे स्वास्थ्यवर्धक है वैसे ही हर घंटे एक मिनट प्रभु की याद शान्तिवर्धक है।

3. 'बरबादी से आबादी की ओर' लेख में एक कैदी की सरल स्वीकारोक्ति बड़ी ही हृदयग्राही है।

4. छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री (सर्वश्रेष्ठ उपाधिधारी) तथा नेता प्रतिपक्ष – सब एकासन पर स्थित होकर बोले, 'हम यहाँ न पक्ष हैं, न प्रतिपक्ष ...' बड़ा उपयुक्त है। ब्र.कु. मोहिनी का संस्मरण, 'यहाँ के निवासी बड़े भोले, सीधे और सरल हैं मानो 36 दैवी गुणों से विभूषित हों .. ' शत् प्रतिशत यथोचित है (मैं वहीं जन्मी, पली, बढ़ी हूँ)।

5. संपादकीय का अंश – 'पैसा यदि धन है तो क्या स्वास्थ्य, चरित्र, शान्ति, खुशी, प्यार और मीठे संबंध धन नहीं हैं?' मानो एक अनमोल मोती है।

**– डॉ. कृष्णा दास, बोकारो**

---

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में नवरात्रि से संबंधित लेखों की भरमार रहती है। इतने त्योहार और इतनी देवियों की पूजा देख बुद्धि सोच में पड़ जाती है कि देवी-पूजा का महात्म्य क्या है? कहीं तो आग थी, उसी का धुआँ है यह। सितंबर 09 अंक में 'नवरात्रि का त्योहार और अर्थबोध' पढ़कर विचार सागर को मथनी प्राप्त हुई। ज़रूर ये सब कहानियाँ बुराइयों से युद्ध की यादगार हैं। शिव बाबा ने इस यज्ञ में नारियों को आगे रखा है इसलिये जनमानस की स्मृति में देवियाँ ही रहती हैं। रक्तबीज वास्तव में विकार के अंश मात्र से ही उसका वंश पैदा हो सकने का प्रतीक है। इस तरह के लेखों से प्रचलित मान्यताओं के सत्य भाव को समझने में पाठकों को मदद मिल रही है। मेरा साधुवाद स्वीकार करें।

**– डॉ. शैलेन्द्र मोहन जैन, इन्दौर**

---

दीपावली के पावन पर्व पर शुभकामनाएँ! अक्टूबर 09 अंक में 'दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य', 'क्रोध नहीं तरस करो', 'श्वेत की शान' आलेख मुझे अच्छे लगे। आज के परिप्रेक्ष्य में यदि सभी मनुष्य इसका पालन करें तो शीघ्र ही सतयुग आयेगा। हमें दृढ़ संकल्प करना है।

**– रतनलाल जोशी,**
**चाणौद (पाली)**

---

अक्टूबर अंक पढ़कर बड़ी प्रेरणा मिली और आनन्द आया,। संपादकीय लेख में वृद्धजन के बारे में पढ़कर मन में आशा की किरण उभर आई। 'टू मीट गॉड' लेख में भी अच्छी प्रेरणादायक बात है। बाबा कहते हैं, कर्मस्थली पर भी बाबा का परिचय दो। इस लेख ने मेरी आँखें खोल दीं। सच तो बिठो नच।

**– ब्र.कु. लक्ष्मीनारायण,**
**बुरला (उड़ीसा)**

**ज्ञानामृत के सर्व पाठकों को नव वर्ष की कोटि-कोटि शुभ बधाइयाँ**

# पुरुषोत्तम मास और ईश्वरीय सेवा में नई विधि

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

ईश्वरीय ज्ञान के चार मुख्य विषय हैं – ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। ज्ञान, योग और धारणा का प्रतिबिम्ब है सेवा अर्थात् जितना हमारे में ज्ञान होगा, धारणा की होगी, योग किया होगा, उसके आधार पर हमें ईश्वरीय सेवा में सफलता मिलती है। सेवा के द्वारा ही हम आगे बढ़ सकते हैं। एक बार साकार बाबा से हमने पूछा था कि सतयुग के राजसिंहासन पर हम कैसे बैठ सकते हैं तो प्यारे ब्रह्मा बाबा ने कहा था कि ईश्वरीय सेवा द्वारा ही वर्तमान संगमयुग में आप बाबा के दिलतख्त रूपी सिंहासन पर बैठ सकेंगे, इसी के आधार पर सतयुग में सबके दिलों रूपी तख्त पर आसीन होकर राजसिंहासन पर बैठ सकेंगे।

सेवा की अनेक विधियाँ हैं। भारत में, पहले, नये स्थान पर सेवा शुरू करने के लिए वहाँ जाकर प्रवचन आदि करते थे, उन प्रवचनों से किसी का निमंत्रण मिलता था तो वहाँ क्लासेस शुरू करते थे। जब क्लासेस में आने वाले बहन-भाइयों की संख्या बढ़ती थी तो गीता पाठशाला बनती थी फिर उन्नति के आधार पर उपसेवाकेन्द्र व सेवाकेन्द्र बनता था। परंतु अब नये स्थान पर पहले प्रदर्शनी करते हैं, फिर राजयोग शिविर रखते हैं, फिर क्लासेस शुरू करते हैं और फिर क्रमानुसार गीता पाठशाला, उपसेवाकेन्द्र, सेवाकेन्द्र बनता है। इस सरल, सामान्य सेवा की विधि से सेवा में वृद्धि भी हुई है।

सन् 1971 में हमें विदेश में ईश्वरीय सेवा करने की स्वीकृति मिली और हम छह डेलीगेट्स विदेश की सेवा करने निकले। उस समय मैं और जगदीश भाई आपस में विचार करते थे कि सेवा की विधि अर्थात् रीति-रस्म विदेश में क्या होनी चाहिए परंतु कोई रास्ता नहीं मिलता था। लेकिन हमें दृढ़ विश्वास था कि शिव बाबा हमें विदेश में सेवा की नई विधि के संबंध में अवश्य ही मार्गदर्शन देंगे।

जब हम लंदन पहुँचे तो वहाँ जयंती बहन के परिवार तथा उनके अन्य साथियों द्वारा अनेक जगहों पर प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए थे। उसी कारण यह तय हुआ कि जगदीश भाई तथा हमारे अन्य तीन साथी लंदन में ही रहेंगे और मैं तथा हमारी आदरणीया दैवी बहन डॉ. निर्मला जी अमेरिका गये। अमेरिका में *Awosting Retreat* में एक अंतर्राष्ट्रीय योग की कांफ्रेंस थी, इस कांफ्रेंस के लिए हम लोगों ने अपने पेपर भेजे थे, प्रदर्शनी करने के लिए चित्र भी साथ में लिये थे। कांफ्रेंस का स्थान न्यूयार्क शहर से करीब 150 मील दूर था। दूसरे दिन सुबह जब मैं पैदल जा रहा था तो एक स्थान पर, कांफ्रेंस में आये हुए डेलीगेट्स भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं तत्व ज्ञानी आदरणीय जे.कृष्णमूर्ति के प्रवचन की कैसेट सुन रहे थे। आदरणीय जे.कृष्णमूर्ति जी आदि शंकराचार्य के एक श्लोक के ऊपर अपना प्रवचन कर रहे थे। मैं भी वहाँ बैठकर शांति से सुनने लग गया। पौने घंटे के बाद प्रवचन की कैसेट पूरी हुई और सब कहने लगे कि कृष्णमूर्ति जी ने कितनी तर्कसंगत रीति से आदि शंकराचार्य जी के विचार प्रस्तुत किये हैं तब मेरे मन में संकल्प उठा कि यहाँ तो शंकराचार्य जी की महिमा हो रही है परंतु वास्तव में शिवाचार्य की महिमा होनी चाहिए। मेरे से रहा न गया और मैंने उठकर शिवबाबा के ज्ञान के आधार पर अपने विचार बताकर सिद्ध किया कि कृष्णमूर्ति जी ने यथार्थ रूप में आध्यात्मिक ज्ञान को सिद्ध नहीं किया और उनकी विचारधारा में जो त्रुटियाँ थीं, वे बताईं। उस संगठन के सामने मैंने पौना घंटा बोला और शिव बाबा के ज्ञान की प्रस्तुति की। संगठन में बैठे सभी श्रोतागण ईश्वरीय ज्ञान को सुनकर आश्चर्य में पड़ गये। उन्हें पहली बार शंकराचार्य जी की विचारधारा में जो त्रुटियाँ थीं, वे महसूस हुई और शिव बाबा के ज्ञान का पहला-पहला स्वाद उन्हें मिला। कांफ्रेंस में आये हुए सभी डेलीगेट्स को लगा कि यह जो डेलीगेट ब्रह्माकुमारी संस्था से आया हुआ है, इसके पास नई विचारधारा की रोशनी है। प्रात: सभा का संचालन करने

वाला चीनू भाई मोदी, अमेरिका में योग का शिक्षक बनकर जीवन-निर्वाह करता था। उसने बहुत अच्छी रीति से ईश्वरीय ज्ञान की गहराई का अनुभव किया। इसका परिणाम यह निकला कि उन्होंने न्यूयार्क के अपने फ्लैट की चाबियाँ हमको दीं क्योंकि वह और उसकी युगल शिकागो शहर में चार मास के लिए योगाभ्यास कराने के लिए जाने वाले थे।

अगले दिन सुबह मैं योग कर रहा था तो शिव बाबा से प्रेरणा मिल रही थी कि विदेश में थोड़े समय में ज़्यादा सेवा करनी हो तो समाज का उच्च स्तर का जो बुद्धिजीवी तथा प्रतिभासंपन्न वर्ग है, उसकी सेवा करनी चाहिए ताकि उनके विचार बाद में अन्य लोगों के बीच प्रचलित हों और कम समय में ज़्यादा लोगों से हम संपर्क कर सकें।

भारत में हम जो सेवा करते हैं उसमें पहले बीज को पानी देते हैं और धीरे-धीरे सेवा का वृक्ष फलीभूत होता है और उस वृक्ष को सेवाकेन्द्र और उपसेवाकेन्द्र रूपी फल आते हैं। परंतु खेती में दूसरा भी एक नियम है जिसमें ऊपर से जल देते हैं तो धीरे-धीरे पानी जड़ों तक पहुँचता है और सारे वृक्ष को मिलता है। इस दूसरी पद्धति का नाम है *Theory of Percolation.*

दूसरे शब्दों में, भारत में आम जनता की सेवा करते-करते हम आगे बढ़ते हैं और फिर समाज के ऊपरी स्तर तक पहुँचते हैं। विदेश में शिव बाबा ने हमको यह सिखाया कि ऊपर के स्तर के बुद्धिजीवी लोगों की सेवा करने से ऊपर से नीचे सेवा रूपी ज्ञानामृत का जल समाज रूपी वृक्ष में फैल जायेगा। रिट्रीट के बाद हम पीट्सबर्ग गए, वहाँ से न्यूयार्क गए और सेवा की इसी विधि से ज़्यादा लोगों की सेवा करने का प्रयत्न किया। न्यूयार्क में हम सारे डेलीगेट्स इकट्ठे हो गए और योग-शिक्षक तथा अन्य संस्थाओं की ईश्वरीय सेवा करना शुरू किया, परिणामस्वरूप, आध्यात्मिक क्षेत्र में रुचि रखने वाले लोगों के हम नज़दीक आ गये और सबको, ब्रह्माकुमारियाँ अब विदेश में पहुंच रही हैं, यह संदेश मिल गया।

समाज के बौद्धिक तथा साधन संपन्न लोगों की सेवा के द्वारा अन्य लोगों की सेवा करने का यह तरीका हमें भारत में भी अपनाना है। अभी लक्ष्य मिला है कि हमें ईश्वरीय सेवा द्वारा वारिस क्वालिटी तथा माइक क्वालिटी आत्माओं की सेवा करके उन्हें भी इस ईश्वरीय परिवार का सदस्य बनाना है। वर्तमान में निज़ार भाई तथा उनके साथियों द्वारा भारत के अग्रणी नागरिकों की सेवा करने का प्लान बना है, जिस द्वारा भारत के 32 मुख्य शहरों में रहने वाले अग्रणी नागरिकों की सेवा करके उन्हें शिवबाबा के ज्ञान के और ईश्वरीय परिवार के समीप लाने का प्रयत्न किया जायेगा। यह बुद्धिजीवी वर्ग सिर्फ हमारे ज्ञान से नहीं किंतु हमारे चलन और चेहरे से भी प्रभावित होगा और इसीलिए विदेशियों के साथ के बाबा मिलन के कार्यक्रम में शिवबाबा ने चलन और चेहरे के द्वारा ईश्वरीय सेवा करने का तरीका बताया है।

अक्टूबर 25, 09 की मुरली में बाबा ने ईश्वरीय सेवा द्वारा तन, मन, धन और जन की सेवा करने को कहा। जन शब्द के आधार पर हमें इस बात का संदेश मिलता है कि हमें अपनी दैवी राजधानी में साहूकार, प्रजा आदि सब स्तर के लोग चाहिएँ अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग में बनने वाले समाज की आधारस्तंभ जनता का निर्माण करना है। जन शब्द का दूसरा लक्ष्य है – द्वापर युग से हमारे जो भी भक्त हैं जिनके द्वारा हमारा गायन अथवा पूजन अथवा गायन एवं पूजन होगा, ऐसे भक्तजनों की संख्या का निर्माण करना। इस प्रकार से शिवबाबा ने हम बच्चों को एक नई सेवा की विधि और मार्गदर्शन दिया हुआ है। यह नई विधि जो जितना जल्दी अपनायेंगे उतना ही जल्दी उसका फल मिलेगा क्योंकि मेरे ईश्वरीय जीवन के अनुभव का सार यही है कि यदि हम शिवबाबा की वर्तमान की प्रेरणाओं को साकार स्वरूप देते हैं तो उससे बहुत मदद मिलती है। ईश्वरीय सेवायें तो सब प्रकार की हैं परंतु शिव बाबा की वर्तमान प्रेरणा के आधार पर जो सेवायें होती हैं, उनसे ज्यादा बल और ताकत मिलती है और फल भी ज्यादा निकलता है। ❖

# पिताश्री का नि :स्वार्थ प्यार

• दादी गुलजार

जब हम यज्ञ (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय) में आये थे तो छोटे-छोटे थे। ब्रह्मा बाबा ने हमारे जीवन की ज़िम्मेवारी शिव बाबा के डायरेक्शन से उठाई। आमतौर पर बड़े को छोटे के ऊपर अधिकार रखने की भावना होती है लेकिन ब्रह्मा बाबा की विशेषता यह देखी कि उनमें यह भावना बिल्कुल नहीं थी कि मैं बाप हूँ और यह बच्चा है, मैं बड़ा हूँ और यह छोटा है। यदि हमारे में से किसी से नुकसान हो जाता था तो वो थोड़ा मन में डरता था पर पिताश्री प्यार से बुलाकर कहते थे, बच्ची, पता है नुकसान क्यों हुआ? ज़रूर आपकी बुद्धि उस समय यहाँ-वहाँ होगी। बच्ची, जिस समय जो काम करती हो उस समय बुद्धि उस काम की तरफ होनी चाहिए, दूसरी बातें नहीं सोचना। इस प्रकार बाबा प्यार से समझाते थे, पिताश्री ने कभी डांटा नहीं, प्यार से शिक्षा दी। पिताश्री शिक्षा देने से पहले हम बच्चों की अच्छाई का वर्णन करते थे। कहते थे, बच्ची, तुम बड़ी अच्छी हो, बड़ी योगी हो, बड़ी ज्ञानी हो, अच्छा तुमसे यह गलती हो गई, कोई बात नहीं लेकिन आगे से अटेन्शन देना। बाबा की ऐसी शिक्षा से उस बच्ची में उमंग आता था कि मैं भी कुछ कर सकती हूँ, बाबा की हमारे में उम्मीद है और मैं बाबा को कुछ करके दिखाऊँ। उमंग-उत्साह बढ़ाना, यह सबसे अच्छी विधि है किसी को आगे बढ़ाने की।

हमारी पालना ब्रह्मा बाबा ने बचपन से ऐसी की जो मैं फलक से कह सकती हूँ कि ऐसी किसी राजकुमारी की भी पालना नहीं हुई होगी। एक बार बाबा ने हमको कहा, आप लोगों को अपने हाथ से नये जूते भी सिलाई करने हैं। हम बहनें तो छोटी आयु वाली थीं, हमारे हाथ कोमल थे। हमने कहा, बाबा, हम तो छोटे हैं और जूते का तला तो बड़ा सख्त होता है, उसमें सूआ लगाना पड़ता है, हमारे हाथ में लग जायेगा, बहुत नुकसान हो जायेगा, हम कैसे यह करेंगे? हमने कहा, बाबा, यह भाइयों का काम है, हमारा नहीं है। पिताश्री ने कहा, क्या तुमने सारे ही जन्म नारी रूप में लिए हैं? हमने कहा, नहीं बाबा, कभी हम नर भी बने होंगे, कभी नारी भी बने होंगे। **बाबा ने कहा, आत्मा में नर, नारी दोनों प्रकार के संस्कार हैं, तभी तो कभी नर बने, कभी नारी बने। तो तुम क्यों समझती हो कि मेरे में सिर्फ नारी के ही संस्कार हैं? ऐसा समझोगी तो कोमलता आयेगी। तुम क्यों नहीं समझो कि मैं चतुर्भुज हूँ। चतुर्भुज समझकर काम करो, देखो, तुम्हारा**

**काम कितना अच्छा होता है।** सचमुच, बाबा की इस शिक्षा को समझ लेने के बाद कभी भी हमारे में नारीपन की कोमलता, निर्बलता नहीं आई। फिर हम समझने लगे कि जो काम भाई कर सकते हैं, वो हम भी कर सकते हैं। हम छोटी-छोटी बच्चियाँ मिलकर यज्ञ के सभी कार्य कर लेते थे।

हम सभी जो भी ओम मण्डली में आये थे, दुनिया के हिसाब से साहूकार घरों से आये थे और अपने घरों में हम लोगों ने कभी पानी का गिलास भी अपने हाथों से नहीं पीया था, वहाँ नौकर बहुत सस्ते थे। एक-एक बच्चे को, एक-एक नौकर तो मुकर्रर होता ही था। परन्तु जैसे पौधे को पानी मिलने से वह खिल जाता है इसी रीति से हम लोगों को ब्रह्मा बाबा ने नि:स्वार्थ प्यार के पानी से अपना बना लिया। फिर जो भी सेवा कराना चाहते थे वह इतनी अच्छी होती थी

**(शेष.. पृष्ठ 21 पर)**

# एक ही हॉबी – सर्विस, सर्विस और सर्विस

• ब्रह्माकुमार निर्वैर, आबू पर्वत

ब्रह्मा बाबा, शिव बाबा की प्रवेशता से पहले सत्यता को जानने के लिए और सात्विक जीवन बनाने के लिए मार्ग खोज रहे थे इसलिए बाबा ने एक गुरु किया, दूसरा गुरु किया, तीसरा गुरु किया, चौथा गुरु किया ... ऐसे 12 गुरु किये। मुंबई में बबूलनाथ मंदिर है, उसके गेस्ट हाऊस में बाबा सन् 1936 में रुके थे। उनके 12वें गुरु भी उस समय वहाँ थे और उस समय ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने अपना साक्षात्कार कराया। बाबा ने सोचा, यह मेरे गुरु की कृपा है। गुरुजी के पास उस खुशखबरी को लेकर गए। गुरुजी ने बिल्कुल साफ शब्दों में कहा कि यह मेरी कृपा नहीं। उसके बाद बाबा के जीवन का नया अध्याय शुरू हो गया। बाबा ने भागीदार से अपना हिस्सा ले लिया। बाबा को जो हिस्सा मिला वह यज्ञ की स्थापना का बीज बन गया। उस बीज का वटवृक्ष आज देश और विदेश में फैल चुका है।

### सागर किनारे के बाद पहाड़ों पर तपस्या

शुरू में यज्ञ में 380 भाई-बहनें थे। छोटे बच्चे, बड़े, परिवार के परिवार उस समय समर्पित हुए। एक साल हैदराबाद-सिंध में रहे, 12 साल कराची में रहे, फिर सन् 1950 में आबू में आ गए। शिव बाबा ने डायरेक्शन दिया कि सागर के किनारे बहुत तपस्या की, अब पहाड़ों पर जाकर तपस्या करनी है। जाँच-परख करने पर माउंट आबू का पहाड़ सबसे ज़्यादा पसंद आया।

### आत्मानुभूति और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव

मैं ज्ञान में पहली फरवरी, 1959 में आया और बाबा के पास आने की डेट 13 जुलाई, 1959 है। बाबा के संग की घड़ियाँ कभी भी हृदय पटल से इधर-उधर नहीं जातीं। स्पष्ट रूप से चित्त पर अंकित हैं जैसे कि आज की बातें हों। बाबा के साथ दस साल बिताए। दस सालों में अनेक बार मधुबन आने का और साकार बाबा से मिलने का सौभाग्य मिलता रहा। बाबा के अव्यक्त होने के बाद जब दादी जी ने आबू में रहना शुरू किया तो उन्होंने मुझे भी मुंबई से यहाँ बुला लिया। साकार बाबा से पहली-पहली मुलाकात जैसी उस समय हुई, वैसी ही इस समय भी होती है। जब गुलज़ार दादी डायमण्ड हॉल में सामने बैठती हैं और बाबा आते हैं तो पहले रूहानी मुलाकात करते हैं, एक-एक को दृष्टि देते हैं, आत्माओं से मिलन करते हैं, तो मेरी भी पहली मुलाकात जब बाबा से हुई तब बाबा गद्दी पर बैठे थे, पास में मम्मा बैठी थी। बाबा दृष्टि देते रहे। मेरे मन में एक ही संकल्प था कि बाबा जो हमने मुरली से जानकारी ली है, पत्र-व्यवहार से बाबा के बारे में जाना है, आज उसका साकार में अनुभव करना

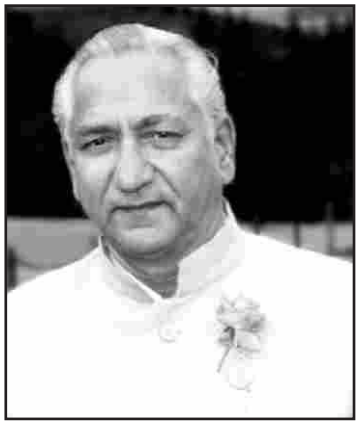

है। बाबा के सम्मुख बैठे मुश्किल से 30-40 सेकंड बीते होंगे, बाबा के मस्तक से लाइट, लाल-लाल नहीं, बिल्कुल सफेद लाइट झलकती रही, दृष्टि के द्वारा प्यार और शक्ति का अनुभव हुआ। इसके फलस्वरूप, आत्म-अनुभूति और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया। यह अनुभव करते हुए पहले का निश्चय और भी पक्का हुआ कि सचमुच बाबा आप इस सृष्टि पर आकर अपना पार्ट बजा रहे हैं, आज से यह जीवन आपकी सेवा में समर्पित है। मन ही मन में बाबा के साथ इस प्रकार वायदा किया और बाबा ने भी स्वीकार किया। लगभग 10-12 मिनट तक उसी अनुभव में खोये रहे और उसके बाद बाबा से बहुत प्यार से गले मिले जिसको कहते हैं, बाबा की गोद में गए, फिर बाबा ने मुख मीठा कराया। मेरे साथ दूसरे भाई भी थे, वो भी मिले, थोड़ा टाइम बाबा ने बहुत प्यार से हालचाल पूछा, थोड़ी ज्ञान की

बातें सुनाईं।

### ज्ञान-दान करके ही नाश्ता करना

बाबा को रूहानियत से इतना प्यार था कि उसके अलावा कोई बात नहीं करते थे, दुनिया की बातों में समय बिल्कुल नहीं देते थे। बाबा को मुरली से भी बहुत प्यार था। हमें भी सारा आकर्षण बाबा के मस्तक और नैनों की तरफ रहता था। बाबा की वाणी आप कभी टेप द्वारा अवश्य सुनते होंगे, ऐसी आवाज़ दुनिया में किसी की भी नहीं है। बाबा की आवाज़ में जो रिचनेस *(richness)* थी, वो किसी में नहीं। बाबा से हमारी मुलाकात के बाद बाबा ने कहा, बच्चे, आज सुबह बाबा की मुरली बहुत अच्छी थी, बहुत अमूल्य ज्ञान-रत्न बाबा ने दिए हैं। पहले मुरली पढ़ो। बाबा ने यह नहीं कहा कि अभी बाबा से मिले हो तो अभी भोजन करो, नहीं, पहले मुरली पढ़ो फिर भोजन करना। बाबा का यह एक सिद्धांत था, जो बाद में भी बाबा ने हमें पक्का कराया। सबसे पहले बाबा की याद, फिर मुरली और फिर किसी को भी ज्ञान के दो अक्षर सुना करके, बाद में नाश्ता करना।

### सदा बेहद की सेवा सामने रही

जब हम पहले-पहले बाबा से मिलने आए थे तब बाहर से आने वाले पाँच-छह लोग ही थे लेकिन मुरली में फुटनोट लिखकर भेजा गया कि मधुबन में बेहद की रिमझिम है। हम एक सप्ताह बाबा के पास रहे, सारा दिन क्या करते रहे होंगे, सोचिए ज़रा! सुबह पहले-पहले 10-15 मिनट मेडिटेशन होता था, उसके बाद मुरली चलती थी, फिर मम्मा के कमरे में बैठते थे। कोई कविता सुनाता, कोई गीत सुनाता, फिर बाबा दो शब्द सुनाते, फिर गले लगाके टोली खिलाते। ईश्वरीय प्यार, ईश्वरीय पालना, उस समय बाबा और मम्मा ने प्रैक्टिकल में दी। फिर हम नाश्ता करते थे। जो मुरली चली होती थी उसके आधार पर बाबा बड़ी दादी, जानकी दादी, गुलज़ार दादी, जगदीश भाई, गंगे दादी आदि जो उस समय सेवा में उपस्थित थे, उन सर्विसएबुल बच्चों को फटाफट पत्र लिखते थे कि देखो, आज बाबा ने क्या-क्या ज्ञान-रत्न दिए हैं, इनका अच्छी तरह अध्ययन करके फिर दूसरों को समझाना। बाबा को सदा बेहद की सेवा सामने रहती थी और पत्र भी इसी ढंग से सबको लिखते थे। जिसका भी पत्र आता था उसको पर्सनल पत्र लिखते थे। जनरल चिट्ठी लिखा कर भेज दें, साइक्लोस्टाइल कराके भेज दें, ऐसा नहीं करते थे। हरेक को व्यक्तिगत, रोज़ के कितने पत्र लिखते होंगे बाबा उन दिनों। बाबा सुबह और दोपहर दो टाइम लिखते थे। लगभग 30-35 पत्र। जो ईश्वरीय सेवा में निमित्त थे, उनको रोज़ बाबा का पत्र नहीं पहुँचता था तो उनको तड़पन होती थी कि आज बाबा का पत्र क्यों नहीं आया।

ब्रह्मा भोजन शुरू करने से पहले, चाहे कितने भी भाई-बहनें पास बैठे हों, हरेक को बुलाकर अपने हाथ से बाबा

ज़रूर खिलाते थे। थे तो सब बड़े-बड़े, शरीर तो बड़ा था सबका, कोई छोटे बच्चे नहीं थे कि मुख में ही खिलाया जाये लेकिन बाबा की हर बात में राज़ था। जब बच्चे बाबा के सामने आते तो बाबा उनको दृष्टि देते। खाने वाले की दृष्टि, चीज़ पर नहीं जाए, चाहे बाबा टोली खिला रहे हैं, चाहे भोजन में से गिट्टी खिला रहे हैं लेकिन दृष्टि का महत्त्व उस चीज़ से भी ज़्यादा था। बाबा ने इतने प्यार से पालना दी।

### सर्व संबंधों का अनुभव

शाम के समय एक घण्टा रोज़ बाबा के साथ बैडमिन्टन खेलते थे। दो टीम होती थीं, बाबा की टीम और मम्मा की टीम। जो जीत जाए उसे सिंगल टोली; जो हार जाये उसे डबल टोली, क्यों? इसलिए कि जो हारे वो डबल टोली खाकर जीते अगली बार। ज़्यादा क्लास आदि नहीं होते थे लेकिन हम यज्ञ की पुरानी एलबम देखते थे। उन एलबम में फोटो होते थे

कि बाबा ने शुरू में जब स्थापना की तो संदेशियों के द्वारा वतन के, सतयुग के क्या-क्या दृश्य दिखाये। विश्वरत्न दादा का अनुभव, किसी और का अनुभव, वो सुनने में घण्टों चले जाते थे। बहुत रुचिकर लगती थीं ये बातें। रात को थोड़ा समय क्लास होता था जिसमें पत्र या सेवा समाचार सुनाये जाते थे। इसी बीच, बाबा के पास कभी कमरे में बैठेंगे, कभी झोंपड़ी में बैठेंगे तो जो बाबा का हम गायन करते हैं कि वो मात-पिता, बंधु, सखा सब हैं; उन सारे संबंधों का अनुभव कराते थे। आप सोचिए, जब ऐसा अनुभव होगा तो बाबा को कैसे छोड़ सकेंगे? सात दिन के बाद मुझे जाना था। मैंने कहा, बाबा, मेरा दिल नहीं है जाने का। बाबा ने कहा – बच्चे, आपका यह घर है, जितना समय रहना चाहो, रहो। तो मैं तीन दिन और रहा लेकिन फिर जाना पड़ा क्योंकि परीक्षा देनी थी। वापस जाने के बाद पहला काम यह किया कि कमांडिग अफसर को प्रार्थना-पत्र लिखा कि मेरा गृह-पता बदल कर c/o ब्रह्मा बाबा, पाण्डव भवन, माउंट आबू कर दो। तब से लेकर यही पता है। आज 50 साल हो गये इस बात को।

### पुरानी आदतों से सहज वैराग

बाबा अक्तूबर, 1959 में मुम्बई आये। मैं बाबा से मिलकर वापस जा रहा था तो गले लगाकर मेरे कान में बाबा ने कहा, बच्चे, जो ज्ञान की बातें सुनी हैं, उन्हें अभी प्रैक्टिकल लाइफ में लाना। चार्ट कैसे लिखना और हर हफ़्ते बाबा को भेजना है तथा रूहानियत जीवन में कैसे आये, वो प्रैक्टिकल मार्गदर्शन दिया। जब पुन: मुंबई आये तो बाबा ने मुझे सर्विस करना सिखाया। ज्ञान कैसे समझाना है, वी.आई.पी. से कैसे मिलना है, बाबा को किस-किससे मिलवाना है, बहुत सारी बातें बाबा ने समझाईं। यज्ञ कारोबार के बारे में सिखाया। उस समय मन में यही आता था कि जो मेरे पास अधिक समय है वह सारा ईश्वरीय सेवा में ही जाना चाहिये। कभी मन्दिर की सेवा, कभी अखबार वालों की सेवा और कभी जहाज़ के अंदर साथ रहने वालों की सेवा। कोई भी समय ऐसा नहीं मिलता था जो हम खेलकूद में जायें, घूमने जायें, सिनेमा देखने जायें बल्कि यह ज्ञान मिलने के बाद अपने-आप ही दिल में आ गया कि हमें देवता बनना है तो हमारा भोजन कैसा होना चाहिए। फिर पूर्ण शाकाहारी बन गए। इसी तरह विचार चला कि बेहद का सृष्टि ड्रामा तो हम देख रहे हैं, हरेक का अद्वितीय पार्ट है, तो फिर सिनेमा देखने की क्या ज़रूरत है, फिर सिनेमा देखना बंद हो गया। **जब मैंने बाबा को अपनी हॉबी के बारे में बताया तो बाबा ने उत्तर दिया कि बच्चे, आपकी एक ही हॉबी होनी चाहिए – सर्विस, सर्विस और सर्विस; दूसरी हॉबी नहीं। तब से लेकर मन में पक्का हो गया कि हमारा यह अलौकिक जीवन बाबा ने दिया है, सिर्फ ईश्वरीय सेवा के लिए है और किसी बात के लिए नहीं।**

### जन्मदिन की सौगात

जब चार-पाँच साल की सर्विस नेवी में हो गई तो मेरा मन हुआ कि मैं पूरा समय ईश्वरीय सेवा करूँ लेकिन कार्यालय में साइन किये हुए थे दस साल तक के, अभी पाँच साल भी नहीं हुए थे ट्रेनिंग के बाद। आखिर बाबा की मदद से कुछ महीनों बाद नेवी से छुट्टी मिल गई। पच्चीस साल की उम्र हुई थी। उस दिन मेरा जन्मदिन था, एक तरह से वो मुझे जन्मदिन की सौगात मिली जो मैं पूरा ही समर्पित हो गया। साकार बाबा उस समय मुंबई में ही थे। बाबा के पास ही आकर रहा। उस समय स्वामी चिन्मयानंद जी वहाँ थे। उनका भाषण सुनने बहुत पब्लिक आती थी। बाबा भेजते थे कि इनका भाषण सुनो, नोट्स लेकर आओ और बाबा को सुनाओ। मैं बाबा को सुनाता था। अगले दिन की मुरली में बाबा उससे संबंधित ज्ञान की गहन बातें सुनाते थे। फिर बाबा प्रश्न निकालकर देते थे कि उनसे जाकर पूछो। बड़ा रुचिकर वार्तालाप होता था। पण्डित नेहरू को भी बाबा ने लिटरेचर देने के लिए भेजा था। बाबा ने इतना ज्ञान का नशा चढ़ा दिया कि लाखों रुपये कीमत के ज्ञान-रत्न हमें मिले हैं! एक-एक ज्ञान की प्वाइंट से क्या धारणा होती है; कैसे जीवन बदलता है; क्या संस्कार बनते हैं; अगर इन बातों को देखा जाये तो मैं मानता हूँ कि हमारे जैसा, ब्रह्मावत्सों जैसा भाग्यशाली दुनिया में कोई भी नहीं। ❖

# बाबा ने मुझे बनाया अपना सुन्दर 'लाल'

• ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल, हरिनगर (दिल्ली)

सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् परमात्मा शिव की अनेक लीलाएँ साकार ब्रह्मा द्वारा देखने का परम सौभाग्य भ्राता सुन्दरलाल जी को प्राप्त है। आपकी हृदय-स्पर्शी वाणी और सरल व्यवहार सहज ही मनुष्य के अन्तर्मन को हर लेता है। आपने गुणों के सागर शिव परमात्मा से अनेक गुणों को प्राप्त करके स्वयं को भरपूर किया है। आपका त्यागी और योगी जीवन प्रेरणास्पद है। आपने देश-विदेश की हज़ारों आत्माओं का प्रभु से मिलन करा कर उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। आप वर्तमान समय हरिनगर (दिल्ली) में ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ज़िम्मेदारियों को संभालते हुए कार्यरत हैं। पाठकों के लाभार्थ सुन्दरलाल भाई जी के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं...

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आबू पर्वत

मेरा जन्म सन् 1928 में झंग मघियाना (अब पाकिस्तान) में हुआ। मेरा परिवार सनातन धर्म को मानता था। मैं समय-प्रति-समय मंदिरों, सत्संगों, आध्यात्मिक गोष्ठियों, शास्त्र-चर्चा में भाग लेता था तथा अखण्ड पाठ आदि का विशेष ध्यान से पठन-पाठन करता था।

सत्य की खोज की जिज्ञासा से मैंने श्रीमद्भगवद्गीता तथा अन्य धार्मिक पुस्तकें भी पढ़ीं परन्तु जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गाँधी एवं रामकृष्ण मिशन के व्याख्यान भी पढ़े। निर्गुण बालक सत्संग में जाकर क्षणिक शान्ति अवश्य मिली परन्तु मन फिर भी इधर-उधर भागता रहता था।

### भ्रान्तियों का निवारण

जब मैंने ब्रह्माकुमारी संस्था का नाम सुना तो यही मालूम हुआ कि इन महिलाओं के पास कोई जादू की शक्ति है जिससे ये प्रत्येक जिज्ञासु को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। मुझे यह भी बताया गया कि जो इस संस्था में जाता है, वापिस नहीं लौटता। 'ब्रह्माकुमारी' नाम से भी मेरे मन में यही विचार आता था कि यहाँ केवल महिलायें और कन्याएँ ही जाती होंगी अतः संस्था के कार्यक्रमों में जाने में हिचकिचाहट होती थी।

एक दिन मेरे विश्वसनीय मित्र आदरणीय भ्राता जगदीशचन्द्र जी ने निजी अनुभव के आधार पर बताया कि ये सब अफवायें निराधार हैं। परिणामस्वरूप, मैंने संस्था की कमला नगर (दिल्ली) शाखा में जाना शुरू किया। कुछ समय बाद मैंने स्वयं अनुभव किया कि यहाँ कोई जादू इत्यादि नहीं है बल्कि यहाँ का वातावरण पूर्ण पावन और शान्तिमय है। मुझे असीम आत्मिक-आनन्द की अनुभूति होने लगी। एक अन्य विशेषता यह देखी कि यहाँ प्रत्येक समस्या व संशय का निवारण व्यक्तिगत रूप से किया जाता है और जीवन क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए तर्क-युक्त, विवेक सम्मत दिव्य ईश्वरीय ज्ञान-योग प्रतिदिन सिखाया जाता है। अंततोगत्वा मेरी सब भ्रान्तियों का निवारण धीरे-धीरे हो गया।

### पिताश्री जी से प्रथम मुलाकात

सन् 1957 में पिताश्री जी का करोल बाग (दिल्ली) में आगमन हुआ, तब उनसे मिलने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहली मुलाकात में बाबा ने शक्तिशाली दृष्टि दी और

कहा – ''मीठे बच्चे, पहुँच गये हो न, बाबा के पास।'' बाबा के मस्तक पर दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। उनका चेहरा चाँद-सा चमक रहा था क्योंकि ज्ञान-सूर्य स्वयं उनमें प्रविष्ट था। मैं बाबा की गोद में गया, बाबा ने अपार स्नेह दिया। ऐसा अनुभव हुआ जैसे बहुत समय से बिछुड़ा हुआ बच्चा बाप से मिल गया हो। पिताश्री जी से प्रथम मिलन ने मेरे मन को मोह लिया और अमिट छाप लगा दी।

बाद में दीदी मनमोहिनी जी के साथ मधुबन (आबू पर्वत) जाना हुआ। दीदी जी ने जब मुझे बाबा से मिलाया, तो बाबा ने कहा – ''आओ मेरे महावीर बच्चे, आओ।'' बाबा के शक्तिशाली बोल सुनकर ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि मेरे में बहुत शक्तियों का संचार हुआ है। मधुबन के उन कुछ दिनों में ही बाबा को अति निकट से देखने का सुअवसर मिला। सचमुच, उनमें असाधारण प्रतिभा थी। वे प्रेम और वात्सल्य की सौम्य मूर्ति थे। संयम-नियम तथा ईश्वरीय मर्यादाओं पर आधारित उनका जीवन विश्व के इतिहास में एक अद्वितीय उदाहरण था और हम बच्चों के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय।

### पिताश्री जी ने मेरा गंधर्व विवाह कराया

कुछ समय से लौकिक माता-पिता मुझे विवाह करने के लिए कहते ही रहते थे, परन्तु 'मैं अभी ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर रहा हूँ' – ऐसा कहकर टालता रहता था जिससे उन्होंने मेरे छोटे भाई को विवाह करने के लिए कहना शुरू किया। वो कहता था कि जब तक मेरा बड़ा भाई विवाह नहीं करेगा, मैं भी नहीं करूँगा। इस प्रकार लौकिक माता-पिता असमंजस में थे। उन्हीं दिनों अमृतसर में एक कन्या शुक्ला जी, 4-5 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान की विद्यार्थी और पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थीं परन्तु उनके लौकिक सम्बन्धी विवाह के लिए उन्हें बहुत मजबूर कर रहे हैं – यह समाचार जब मम्मा-बाबा को मिला तो उन्होंने चन्द्रमणि दादी जी द्वारा संदेश भेजा कि जब दोनों बच्चों (शुक्ला जी और मैं) का ईश्वरीय ज्ञान पर पूरा निश्चय है और पवित्रता की धारणा में अटूट विश्वास है तो

गंधर्व विवाह में बहन शुक्ला जी तथा भ्राता सुन्दरलाल जी

दोनों को विवाह करके पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए बाबा स्वीकृति देते हैं। तत्पश्चात्, दोनों के लौकिक सम्बन्धियों ने विचार-विमर्श करके विवाह निश्चित किया और 10 दिसम्बर, 1960 में हम दोनों का गंधर्व विवाह अलौकिक रीति से सम्पन्न हुआ।

अलौकिक विवाह के पश्चात् दो वर्ष तक हम दोनों लौकिक माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों सहित एक ही परिवार में रहे। प्रतिदिन प्रात:काल ईश्वरीय ज्ञान की क्लास करने सेवाकेन्द्र पर जाते थे, जिससे कमल-पुष्प समान पवित्र जीवन व्यतीत करने में बहुत सहायता मिली।

मैं स्कूल में लौकिक सर्विस करता था। जब पटेल नगर (दिल्ली) में तबादला हुआ तो हमने अन्य आत्माओं की ईश्वरीय सेवार्थ ईश्वरीय सेवाकेन्द्र वहाँ भी खोल दिया। नियमित राजयोग के अभ्यास से जीवन में दिव्य गुणों की धारणा होती गई। स्कूल में मेरे अच्छे व्यवहार का प्रभाव साथियों पर पड़ा, जिससे आपस में सम्बन्ध अच्छे बने। परिणामस्वरूप, मेरी प्रिंसीपल के पद पर और बाद में शिक्षा अधिकारी के पद पर नियुक्ति हुई। ऐसे हमें बाबा की बहुत मदद मिलती रही।

बाबा के अव्यक्त होने का समाचार सुनते ही मुझे अजीब-सा धक्का लगा। मैं शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली से

मधुबन (आबू पर्वत) पहुँचा। बाबा का पार्थिव शरीर सभा-कक्ष में रखा था, चारों तरफ से उस महानतम् विभूति के अन्तिम दर्शन की अभिलाषा से हज़ारों वत्स स्नेह के मोती नयनों में छिपाये मधुबन पहुँचे। मुझे पूर्ण निश्चय था कि बाबा का कार्य चलता आया है, चलता रहेगा।

**मैंने बाबा में क्या-क्या देखा:-**

**बाबा के जीवन में मैंने संतुलन देखा** – बाबा की पावरफुल पर्सनैलिटी होते हुए भी नम्र भाव और प्रेम सम्पन्न व्यवहार देखा। बाबा के जीवन में यह अनोखा संतुलन था। बाबा विश्व पिता होते हुए भी, यज्ञ की हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखते थे। एक-एक बच्चे के लिए हर प्रकार की सुविधा हो, ऐसी बेहद की भावना बाबा के दिल में रहती थी।

**बाबा छोटे-बड़ों को सम्मान से देखते थे** – जब छोटे बच्चे बाबा के सामने आते थे, तो बाबा उन्हें सत्कार की दृष्टि से देखते थे। बाबा उनकी महिमा करते थे कि देखो, यह बच्ची कितनी योगयुक्त है, नयनों में बाबा के प्रति असीम प्यार है। बाबा की मुरली बहुत प्यार से सुनाती है। कभी बच्ची से बाबा पूछते थे – तुम सभा में संदली पर बैठकर योग कराओगी। बच्ची कहती थी – हाँ बाबा, तो मम्मा-बाबा दोनों तरफ संदली पर बैठकर, बीच में संदली पर बच्ची को बिठाते थे। बच्ची के आरगन्स छोटे हैं लेकिन आत्मा तो छोटी नहीं – ऐसे बाबा कहते थे। कभी बुजुर्ग माताएँ सामने आती थीं, तो बाबा कहते थे – गाँव की माताएँ बहुत अच्छी होती हैं, उन्हों में निश्चय और भावना होती है, वे भोली लेकिन सच्चे दिल वाली होती हैं। ये माताएँ गाँव-गाँव जाकर बहुतों को जगायेंगी। बाबा उनके स्वमान को ऊँचा उठा कर, उमंग-उत्साह के पंख लगाते थे।

**बाबा प्रेम के सागर थे** – मधुबन में रहने वाले तथा समय-प्रति-समय मधुबन में आने वाले सभी बच्चों के प्रति बाबा का लाड़-प्यार, घुमाना-फिराना, बहलाना, खिलाना-पिलाना आदि ''तुम्हीं से खेलूँ, तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ'' का गायन चरितार्थ कर देता था। गरीब-अमीर का भेद छोड़, गुणों पर आकर्षित होना तथा करना, हर कर्म करते भी अलौकिकता – ये थी प्रेम सागर के प्रेम की लहरें। बाबा राज़ी-खुशी पूछते, हर बच्चे की समस्या पूछते और सुविधा देते। विदाई के समय बड़े प्रेम से हर बच्चे को याद सौगात देते। जब प्राण प्रिय बाबा हमें छोड़ने आते और विदाई देते तो हमारी आँखों से प्रेम के आँसू निकल पड़ते। रास्ते भर अतीन्द्रिय सुख तथा बाबा के प्रेम से विभोर हो, हमें मधुबन तथा बाबा ही याद आते रहते। ऐसा अनोखा, अनुपम और अलौकिक ईश्वरीय प्यार पाकर, सभी बच्चे लौकिक मित्र-सम्बन्धी आदि सबसे मन को निकाल कर, एक ही प्रेम के सागर के हवाले करने को विवश हो गये।

**बाबा निरन्तर सेवारत थे** – बाबा 93 वर्ष की आयु में भी निरन्तर सेवा पर तत्पर रहते थे, फिर भी उनके चेहरे पर थकान या उदासीनता का नामोनिशान न होता था क्योंकि वे सेवा कार्य कर्त्तव्य भावना से नहीं वरन् प्रेम भाव से करते थे। प्रेम के वश किया गया कार्य थकावट को समाप्त कर देता है। पिताश्री जी स्वान्त: सुखाय सेवा कार्य करते थे। बच्चों की सेवा करने में उन्हें आनन्द मिलता था। उनका हृदय प्रेम से परिपूर्ण था। वे चाहते थे कि किसी तरह बच्चों का आध्यात्मिक पुनरुत्थान हो जाये और ये आत्मिक-उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जायें।

**विदेश सेवा में जाना हुआ** – सन् 2006 में मुझे दादी जानकी जी की स्वीकृति से विदेश में ईश्वरीय सेवार्थ जाने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। शुक्ला जी भी मेरे साथ थीं। मेरा विशेष यू.के., जर्मनी, हॉलैण्ड, फ्रांस, इटली, स्पेन आदि देशों में जाना हुआ। सेवा के दौरान बहुत सुन्दर अनुभव भी हुए। वर्तमान समय हरिनगर (दिल्ली) में विभिन्न वर्गों की बहुत अच्छी सेवाएँ चल रही हैं। वी.आई.पीज़. के साथ सम्बन्ध-

**(शेष.. पृष्ठ 32 पर)**

# मुहब्बत में मेहनत नहीं

• ब्रह्माकुमारी नलिनी, घाटकोपर (मुंबई)

जब मैं ज्ञान में आई तब मेरी आयु 13-14 वर्ष थी। पढ़ाई के साथ-साथ फैशन करना, होटलों में खाना, सहेलियों के साथ पिक्चर जाना – ये सब मैं करती थी। किसी ने कभी सोचा भी नहीं था कि यह ज्ञान में चल सकती है। मुझ में न प्रभु की भक्ति थी, न श्रद्धा थी, हाँ, लौकिक माता-पिता के साथ कभी-कभी ज्ञान सुनने चली जाती थी।

### कमाल सच्चे रूहानी स्नेह की दृष्टि की

जब पहली बार मीठे-मीठे बापदादा को देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि लौकिक में दादा-नाना नहीं थे, बुजुर्गों के प्रति आकर्षण था। बाबा से कैसे मिलना हुआ, आज भी याद करती हूँ तो रोमांच खड़े हो जाते हैं। पहली बार जैसे ही बाबा ने मुझे दृष्टि दी, मैं कैसे गले लग गई, कब आँखों से आँसू आए, पता ही नहीं पड़ा। यह सब सच्चे रूहानी स्नेह का ही सबूत था। वो कब का पुराना स्नेह था, कब की स्मृति थी, तब तो मैं कुछ नहीं समझ पाई। प्यार के सागर की स्नेह की दृष्टि ने मुझे अपना बना लिया। तब से लेकर आज तक मैंने अपने जीवन को स्नेह से ही चलाया है। बाबा ने मुझे बहुत स्नेह दिया, उसी स्नेह ने ही मुझे चलाया।

### बाबा ने मेरी नब्ज़ पकड़ी

बाबा को खुद मेरी हैण्डलिंग अपने हाथ में लेनी पड़ी और मुझ आत्मा को मार्ग दिखाना पड़ा। मेरे जीवन में धीरे-धीरे परिवर्तन आता गया। सोचती हूँ, पचास वर्ष हो गए ज्ञान में, आज भी ऐसा लगता है कि वही मेरे बापदादा अभी भी मेरे सामने हैं और मैं वही 13-14 साल की छोटी-सी बच्ची हूँ। कभी डांस करती थी, कभी गीत गाती थी और कभी बाबा ना पूछे तो भी दिल की बातें उन्हें बता देती थी। आज समझ में आता है कि वे बिल्कुल व्यर्थ, सांसारिक बातें होती थीं। दिल की हर बात चाहे नेगेटिव हो या अच्छी, कैसी भी हो, मैं बाबा को बताती थी। मैं यह भी नहीं जानती थी कि ऐसी बातें बताना ठीक है या नहीं। यह सब स्नेह में ही हुआ। स्नेह में ही मैंने बापदादा से कई बातें सीखी। स्नेह ने मुझे बापदादा के इतना समीप लाया कि मैं बापदादा के साथ भोजन करना, नाश्ता करना, झूला झूलना, घूमना आदि सब करने लगी। जब मैं अपने भाग्य के बारे में सोचती हूँ तो यह गीत अंदर से निकलता है – वाह मेरा भाग्य जो साकार बाबा की पालना मिली। बाबा ने मेरी हैण्डलिंग अपने हाथ में क्यों ली क्योंकि मैं इतना ज्ञान सुन नहीं पाती थी, बोर होती थी। सम्मान देने के ख्याल से और लौकिक

माँ की बात रखने के लिए मैंने ईश्वरीय ज्ञान सुना और सात दिन का कोर्स भी किया। यह बात ज्यों की त्यों मैंने बाबा को बताई। बाबा ने एक वकील भाई की ड्यूटी लगाई कि इस बच्ची की बुद्धि में 'परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है', 'आत्मा सो परमात्मा नहीं है', 'आत्मा निर्लेप नहीं है', 'गीता का भगवान शिव है', ये सब बातें अच्छी तरह बिठा दो। स्वाभाविक है कि बाबा की यह आज्ञा पाकर वह बहुत खुश हुआ। दूसरे दिन से ही उसने मेरी ज्ञान-सेवा प्रारंभ कर दी। मैं जहाँ भी जाऊँ, नाश्ता करूँ या भोजन करूँ – वह आ जाता था और ज्ञान सुनाना शुरू कर देता था। मैं तो आधा दिन में ही बोर हो गई। वो भी शाम को मैंने बाबा को जाकर बता दिया कि बाबा, यह वकील भाई बहुत ज्ञान सुनाता है, मैं बोर होती हूँ, मैं इतना ज्ञान नहीं सुन सकती। बाबा ने तुरंत मेरी नब्ज़ पकड़ ली कि इस बच्ची को कैसे चलाना होगा। फिर बाबा ने कभी

खेलते-खेलते ज्ञान सुनाया, कभी खाते-पीते ज्ञान की बातें सुनाईं। बाबा ने बड़े स्नेह से ऐसी बातें भी कीं जो मुझे अच्छी लगीं जैसे कि कॉलेज में क्या होता है, कैसे चलती हो आदि-आदि। दुनियावी बातों को लेकर भी बाबा बातें करते। बाबा कहते – गीत गाओ। मैं कहती – मुझे भजन नहीं आते, मुझे तो पिक्चर के गीत आते हैं। बाबा कहते – अच्छा, पिक्चर का ही गीत सुनाओ बाबा को, देखो, चाँदनी रात है, चाँद है, कितना अच्छा वातावरण है।

### पीतांबरधारी को वरेगी या सूट-पैंट वाले को?

एक बार बातों ही बातों में मैंने बाबा को यह भी कह दिया कि बाबा, मैं तो सूट-पैंट वाले से शादी करूँगी जो विदेशी हो और बहुत धनवान हो। बाबा ने कहा – क्यों, पीतांबरधारी से शादी नहीं करोगी? मैंने कुछ जवाब नहीं दिया। मैंने इसलिए जवाब नहीं दिया क्योंकि मन में संकल्प था सूट-पैंट वाले से शादी करने का । अब यह संकल्प तो बाबा को मिटाना था। मेरी जन्मपत्री तो बाबा जानते थे। बाबा को तो कैसे भी करके मुझे जागृत करना था। बाबा ने धीरे-धीरे मुझे ज्ञान की बातें सुनानी शुरू कीं। कभी-कभी यह भी पूछते रहते – तुम किसको वरेगी? सूट-पैंट वाले को वरेगी या पीतांबरधारी को? सभा में भी बीच-बीच में मुझसे प्रश्न पूछे। मैं एक मास मधुबन में रही। बाबा से बहुत प्यार हो गया। दादा-नाना के प्यार की प्यास थी। दुनिया में देखती तो सोचती, काश, मेरे भी दादा-नाना होते तो मैं भी उनका स्नेह पाती। बाबा के साथ रहने से मेरी वह प्यास बुझ गई। बाबा मेरे साथ खेलते, खाते, बैठते, ज्ञान सुनाते तो वह कमी पूरी हो गई। जब जाने के दिन नज़दीक आने लगे तो 10-12 दिन पहले से ही रोना शुरू कर दिया कि अब बाबा से बिछुड़ना पड़ेगा। जब-जब बाबा मुझे मिलते, यही प्रश्न करते – तू पीतांबरधारी से शादी करेगी या सूट-पैंट वाले से? आखिरी दिन जब विदाई हुई और मैं बाबा के गले लगी तो भी कान में धीरे से बाबा ने यही पूछा – जाकर क्या करोगी, सूट-पैंट वाले से शादी करोगी या पीतांबरधारी

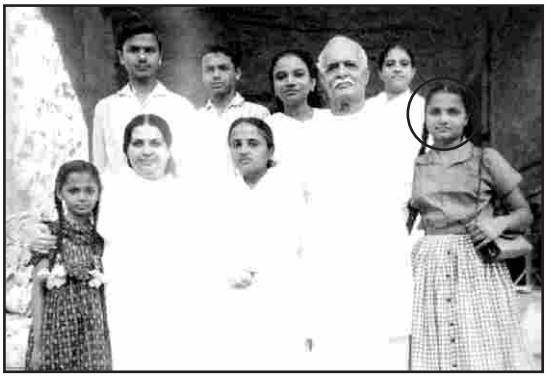

से? मैं रो भी रही थी और साथ में सोच भी रही थी कि अगर मैं कह दूंगी कि मैं सूट-पैंट वाले से शादी करूँगी तो मैं बाबा से सदा के लिये जुदा हो जाऊँगी। जब बाबा ने देखा कि यह सोच रही है तो बाबा ने क्या किया, जेब से रूमाल निकाला और अपनी ही आँखों पर उसे लगाते हुए कहा – देख, तुम्हारा बाबा फिर बहुत रोयेगा अगर तूने पीतांबरधारी से शादी नहीं की तो। मैंने तुरंत बाबा का हाथ पकड़ लिया और कहा – नहीं बाबा, मैं पीतांबरधारी से ही शादी करूँगी।

### आशिक हुए भगवान

वापस गई तो सांसारिक रंग चढ़ने लगा। मैंने बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, माया आती है, संकल्प आते हैं। फिर बाबा पत्र लिखते, पत्रों के द्वारा भी मुझे बहुत प्यार देते। उन पत्रों को पढ़कर मेरी धारणा पक्की होती गई। बाबा जब मुंबई आए तो मानो मुझे एकदम पक्का बनाने के लिए ही आये। एक दिन जब मैं बाबा की मुरली सुनने नहीं गई तो लौकिक माँ के द्वारा बाबा ने संदेश भेजा। संदेश सुनकर मैं बाबा से मिलने आई। बाबा ने मुझे अपने पास बिठाकर कहा – देखो बच्ची, सारी दुनिया इस बाप के ऊपर आशिक होती है लेकिन यह जो बाप है ना, तेरे पर आशिक हुआ है। तू इसकी माशूक़ है इसलिए बच्ची, बाबा शिवरात्रि पर बच्चों को सौगात देने के लिए कैलेण्डर छपवाना चाहता है और उस कैलेण्डर में आप बच्ची को बिठाना चाहता है। देखो बच्ची, लोग कहते हैं कि भगवान

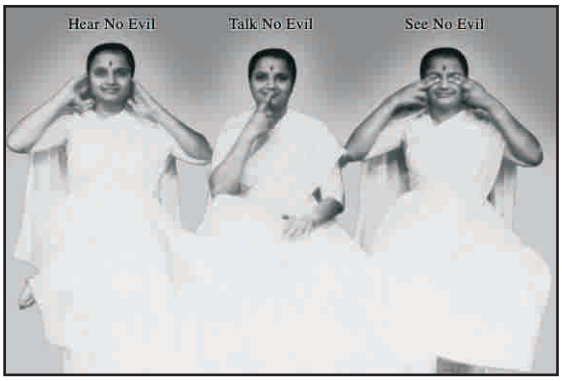


सर्वव्यापी है परंतु मैं तो सर्वव्यापी हूँ नहीं लेकिन आज से मैं तुझे सर्वव्यापी कर देता हूँ। बच्ची, बाबा तुम्हें फोटो में बिठाकर सर्वव्यापी बना रहा है। इसलिए तुम आज यह फाइनल सोच लो कि तुम्हें क्या करना है। मैं पहले से ही सोच कर आई थी, पहली बार सफेद ड्रेस पहन कर आई थी। उसी ड्रेस में फोटो निकाला। 'बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो, बुरा मत देखो' – इस पोज़ वाला फोटो निकाला, कैलेण्डर छपे फिर सभी सेवाकेंद्रों पर सभी भाई-बहनों को सौगात दी बाबा ने। उस स्नेह ने मेरी पहचान बनाई, उस स्नेह ने मेरे ब्राह्मण जीवन का अस्तित्व बनाया।

आज बाबा ही मेरा अस्तित्व है, बाबा ही मेरी पहचान है। यदि बाबा नहीं तो मेरी कोई पहचान नहीं। बाबा नहीं तो मैं नहीं। बाबा ने ऐसा स्नेह दिया जो मुझे आज तक अनुभव नहीं कि मुझे कभी मेहनत करनी पड़ी हो। समस्याएं आईं, माया आई, अनेकानेक परीक्षाओं को मैंने पास किया पर ऐसा कभी अनुभव नहीं हुआ कि ज्ञान में चलना बहुत मुश्किल है या समर्पित जीवन बहुत कठिन है। ना ही कभी त्याग-तपस्या भारी लगे। कोई भी शारीरिक कर्मभोगना बाबा के साथ से सरल हुई है। ऐसा लगता है, बस बाबा और मैं। बाबा कहते, तुम बच्चों की सूरत में बाबा की सीरत दिखाई दे। बाबा ने मेरी पहचान ऐसी बना दी है जो कोई भी मुझे देखता है तो उसे बाबा स्वत: याद आता है। हमने बाबा की यादों में गीत बनाए, कविताएं बनाईं, गीत गाए। इसलिए स्नेह में मेहनत नहीं हुई। ❖

## पिताश्री का नि:स्वार्थ..पृष्ठ 12 का शेष

जो आज आप उसका परिणाम देख रहे हैं। ब्रह्मा बाबा के प्रशासन की विशेषता यह थी कि उन्होंने कभी किसी बच्चे के उमंग को कम नहीं होने दिया।

एक बार एक भाई ने पिताश्री से शिकायत की, ''बाबा, वैसे तो मुझे योग में बहुत सुख मिलता है, चाहे घर में योग लगाऊँ, चाहे क्लास में आकर योग लगाऊँ लेकिन जब कार्य-धंधे पर जाता हूँ तो वहाँ के वातावरण के प्रभाव में आ जाता हूँ। वहाँ योग न लगाने वालों की संख्या ज़्यादा होती है इस कारण उनका प्रभाव मेरे पर आ जाता है। जब वायुमण्डल का असर आता है, मैं बहुत सोचता हूँ, 'मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ', पर यह भी थोड़ी देर याद रहता है, फिर भूल जाता हूँ।''

बाबा ने कहा, ''बच्चे, बहुत सहज तरीका है, अपनी पॉकेट में एक अगरबत्ती का पैकेट रखो।'' वह सोचने लगा, अगरबत्ती पैकेट का मैं क्या करूँगा? बाबा ने कहा, **''जिस समय तुम वायुमण्डल के प्रभाव में आ जाओ तो एक अगरबत्ती अपने सामने जलाकर रखो और फिर सोचो, अगरबत्ती बनाने वाला कौन? आप मानव आत्मा ने ही तो इसे बनाया है ना! आप रचयिता हो और अगरबत्ती आपकी रचना है। फिर सोचो, क्या अगरबत्ती कभी कहती है, बदबू है, मैं कैसे खुशबू फैलाऊँ? फिर बाबा ने कहा, यह अगरबत्ती दुबली-पतली, तुम इससे भी गए गुजरे हो क्या?''** बाबा की इस बात से वह भाई बहुत प्रेरित हुआ। उसने सोचा, जब हमारी रचना में यह गुण है कि वह बदबू को खुशबू में बदल सकती है तो मैं तो मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरा प्रभाव सर्व पर होना चाहिए, न कि सर्व का प्रभाव मुझ पर हावी हो जाए। इस प्रकार बाबा की स्नेह भरी शिक्षा से उसे विजयी बनने का मार्ग मिल गया। ❖

# बाबा बोले – तुम आलराउण्ड सेवाधारी हो

• ब्रह्माकुमार लक्ष्मण, कुरुक्षेत्र

सन् 1961 में मैं पहली बार प्यारे बाबा से मिलने मधुबन आया। बाबा के कमरे में ही मिलन हुआ। बाबा और मम्मा दोनों बैठे थे। प्यारे बाबा ने ऐसी शक्तिशाली रूहानी दृष्टि दी कि नेत्र-मिलन करते-करते नेत्रों से प्रेम की गंगा, यमुना बह चली। फिर प्राणप्रिय बाबा ने मुझे गोदी में ले लिया। प्यारे बाबा के मुख से निकला – आओ, मेरे मालिक और बालक आओ, अब तो मिल गए ना। ऐसे कहते-कहते रूमाल से मेरे आँसू पोंछे। बाबा के साथ इस अलौकिक मिलन से बहुत खुशी और आनन्द प्राप्त हुआ। लगभग सप्ताह भर मधुबन में रहा। एक दिन बाबा ने अपने साथ बैडमिंटन का खेल खिलाया। बाबा ने कहा – **बच्चे, खेलो भी बाबा की याद में और अवस्था को भी एकरस रखो।** उन स्वर्णिम दिनों में तो जैसे मन में, मुख पर और आंखों में बाबा ही बाबा बसा हुआ था। प्यारे बाबा जब मुरली चलाते थे तो मैं आगे-आगे बैठता था। महावाक्य सुनकर अन्दर ही अन्दर मन-मयूर नृत्य करता था। एक दिन प्यारे बाबा के इशारे से ही मीठी मम्मा ने मुझको मीठी रोटी और मक्खन खिलाया। जैसे लौकिक माँ बच्चे को गोदी में लेकर प्यार से मीठी चीजें खिलाती है, उस आनन्द से भी कई गुणा अलौकिक आनन्द इस अलौकिक माँ के सान्निध्य से प्राप्त हुआ। एक दिन प्यारे बाबा के साथ भोजन करने का परम सौभाग्य मिला तो मैंने देखा कि बाबा की चपाती तो बहुत छोटी थी और मेरी चपाती बड़ी थी। फिर भी बाबा तो शिवबाबा की याद में लवलीन हुए-हुए भोजन स्वीकार कर रहे थे और उन्होंने एक चपाती खाई तब तक मैं तीन चपाती खा गया। इससे मुझे शिक्षा मिली कि खाना भी प्यारे बाबा की याद में धीरे-धीरे खाना चाहिए।

### जब तक जीना है सेवा में लगे रहना है

एक मुलाकात में प्यारे बाबा ने वरदान दिया – **बच्चे, तुम ऑलराउण्ड सेवाधारी हो, डबल टीचर हो।** मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं खोया हुआ बालक अपने घर पहुँच गया हूँ। एक दिन बाबा रसोई में ले गए। वहाँ मुझे पूरी का आटा बनाना, पूरी तलना सिखाया। खाना बनाना भी मैंने मधुबन में ही सीखा। एक दिन बाबा स्टाक-रूम में ले गये, उसमें कपड़ा-चप्पलें आदि थे। मम्मा ने कहा – आपको जो चाहिए ले लो। फिर मुझे एक मोटे सफेद कपड़े का थान मम्मा ने दिया। सेवास्थान पर आकर उसका एक-एक जोड़ा हम सबने पहना। मुझे अनुभव हुआ कि मैं बाबा के घर का मालिक हूँ। जितने दिन मैं रहा, घर-

बार, तिथि आदि सब भूल गया। इतना स्नेह मिला कि मैंने प्रण कर लिया कि मैं सारा जीवन बाबा के पास लगाऊँगा। जब तक जीना है, बाबा की सेवा में लगे रहना है। प्रेम, शान्ति, आनन्द का बहुत अच्छा अनुभव हुआ। बाबा पत्रों में भी यही लिखा करते थे कि लक्ष्मण मालिक है, जो चाहे सो करे।

### एक आँख में मुक्ति, दूसरी आँख में जीवनमुक्ति

अब जहाँ विशाल भवन है, वहाँ पहाड़ी थी। एक दिन बाबा ने कहा – बच्चे, चलो, वहाँ से ज्वार की पूलियाँ उठानी हैं और गऊशाला में रखनी हैं। बाबा आगे-आगे चले। बाबा बोले – बच्चे, मुझे यहाँ जापानी महल बनाना है। फिर तुरन्त ही बाबा ने विचार बदलते हुए कहा – चलो छोड़ो, कितने दिन रहना है। उनकी एक आँख में मुक्तिधाम, दूसरी में जीवनमुक्ति-धाम था। मनमनाभव, मध्याजीभव को सदा याद रखते थे

बाबा। बाबा हर वक्त व्यस्त रहना सिखाते थे। एक दिन मुझे अनादरा प्वाइंट *(Point)* पर भेज दिया और कहा कि वहाँ लोग गेहूँ लेकर आते हैं, देखो क्या भाव देते हैं, गेहूँ अच्छे हैं या नहीं, इस प्रकार, बाबा ने मुझे व्यस्त कर दिया। बाबा बच्चों का बहुत ख्याल रखता था। एक दिन नगरपालिका की तरफ से पानी नहीं आया, रात के नौ बजे थे। सवेरे स्नान के लिए पानी की आवश्यकता पड़नी थी। बाबा के इशारे से हमने एक बाल्टी उठाई और आर्य समाज मन्दिर के सामने स्थित कुएं से भर-भर लाने लगे। बरसात हो रही थी, पानी लाते समय एक भाई का पाँव फिसल गया, वह गिर गया। बाबा ने बड़े प्यार से उस बच्चे से पूछा – चोट तो नहीं लगी और पानी लाने का काम बन्द कर दिया। बाबा बच्चों की बहुत सम्भाल करते थे।

### अल्लाह के पट्ठे

मैं स्कूल में शिक्षक था और बच्चों को अनुशासित रखने के लिए कभी उल्लू का पट्ठा भी उन्हें कह दिया करता था। ज्ञानमार्ग पर चलने वाले के मुख से निकलने वाला एक-एक शब्द महावाक्य अथवा प्रेरणादायी वाक्य होना चाहिए, यह ज्ञान मिलने के बाद मैंने अपनी समस्या बाबा को बताई और यह शब्द न बोलूँ, इसका सरल उपाय मांगा। प्यारे बाबा तो युक्तियाँ बताने में ऐसे माहिर थे कि पल में समाधान मिल जाता था। प्यारे बाबा ने पत्रोत्तर में लिखा, **बच्चे, तुम पट्ठे भले कहो पर 'अल्लाह के पट्ठे' कहो।** देखिए तो बाबा का उत्तर! एक शब्द के परिवर्तन से बाबा ने मेरे 84 जन्मों के भाग्य को ही जैसे बदल कर श्रेष्ठ बना दिया क्योंकि वाणी भी तो भाग्य निर्माण में अहम भूमिका निभाती है।

### युक्तियुक्त जवाब

बाबा के पास निराशा को आशा में बदलने वाले, नकारात्मक को सकारात्मक बनाने वाले, हिम्मतहीन को हिम्मतवान बनाने वाले शब्दों का अचूक भण्डार था। **एक बार मैंने कहा, बाबा, मेरी बदली घर से दूर हो गई है, मुझे ठण्डा भोजन खाना पड़ता है। प्यारे बाबा ने तुरन्त कहा, कोई बात नहीं बच्चे, पेट में जाकर भी तो ठण्डा हो ही जाता है।** बाबा का उत्तर सुनकर मेरा मन तृप्त हो गया। एक बार मैंने एक सरदार भाई की ईश्वरीय सेवा की और उसे बाबा से मिलाने मधुबन ले गया। उसके मन में प्रश्न था कि गुरु नानक देव जी की आत्मा इस समय कहाँ है। बाबा मुरलियों में बताते हैं कि सभी धर्मस्थापक अपनी चौथी अवस्था में हैं और यहीं हैं। उसे लगा कि इतने महान धर्मस्थापक की यह अवस्था कैसे हो सकती है? तब बाबा ने कहा, बच्चे, पहले नम्बर वाला श्री नारायण भी अपनी चौथी अवस्था में पहुँचकर पुन: उठने का पुरुषार्थ कर रहा है तो शेष किसी का तो कहना ही क्या? यह उत्तर सुन वह सन्तुष्ट हो गया।

### द्रौपदी की लाज बची

विरोधों के तूफानों में भी हम ईश्वरीय सेवा की नाव को खेते रहे। पास के गांव जठलाना में भी हमने सेवा शुरू की। मैं वहाँ शनिवार शाम को जाता था और सोमवार सुबह तक चार प्रवचन करके लौट आता था। एक दिन किसी कारण से रविवार को लौटा तो ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा कि शेरसिंह भाई (रोज क्लास में आने वाला एक इन्सपेक्टर भाई) मुझे अपने गाँव ले जाना चाहता है। मैंने कहा–वह तो खुद ही सिगरेट पीता है, उसकी धारणाएं ठीक नहीं हैं, उसके साथ जाकर क्या करोगी। तभी वह भाई तांगा लेकर पहुँच गया। ब्रह्माकुमारी बहन तैयार होने कमरे में गई तो ध्यान में चली गई। प्यारे बाबा ने उसको कहा–मेरी बच्ची, कहाँ जाती है? वह बाबा का इशारा समझ गई और युक्ति से शेरसिंह को मना कर दिया। बाद में एक विरोधी सभा आयोजित हुई जिसमें उसने सरेआम एलान किया कि मैं आज ब्रह्माकुमारी बहन की पवित्रता की परीक्षा लेना चाहता था और परखना चाहता था कि भगवान आया है या नहीं। परन्तु उसके परखने से पहले ही सर्वसमर्थ भगवान ने उसकी दुष्टता को जान लिया और अपनी बच्ची को अपनी छत्रछाया में ही रखे रखा। इसलिए कहा जाता है– जिसकी बुद्धि रूपी डोरी प्रभु के हाथ है, उस पर कभी कोई विपत्ति वार कर

नहीं सकती, विपत्ति हार खाकर औंधे मुँह गिर पड़ती है।

### माँ जगदम्बा का आगमन

उन्हीं दिनों यज्ञ-माता जगदम्बा सरस्वती का करनाल में आना हुआ। मैं उनको अपने सेवास्थान पर पधारने का निमन्त्रण देने गया। किसी के मुख से निकल गया कि वहाँ ना जाना क्योंकि लक्ष्मण भाई धनाभाव में ठीक प्रबन्ध नहीं दे सकेगा। पता लगा तो मुझे बहुत रोना आया। गरीब तो मैं नहीं था पर भाई की पढ़ाई के कारण हाथ थोड़ा तंग रखना पड़ता था। पर करुणा की अवतार माँ ने कहा– मैं छिछरौली आऊँगी और कार का प्रबन्ध स्वयं ही करके आऊँगी। प्यारी मम्मा आई, हम सब ब्रह्मा-वत्सों को वरदान मिले और सेवा कार्य प्यारे बाबा की मदद से शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो गए।

### एक बच्चा और बच्ची दी बाबा ने

सन् 1963 में प्यारे बाबा ने मुझे एक बच्चा और एक बच्ची दी। आप समझ गए होंगे कि ये कौन थे। जर्मनी निर्मित स्लाइड प्रोजेक्टर तथा हालैण्ड का बना हुआ फिलिप्स टेप रिकार्डर सेवा के लिए दिया। मैंने प्रोजेक्टर के द्वारा गाँव-गाँव में और शहरों में भी बाबा का सन्देश देना आरम्भ कर दिया। घरों में बिजली नहीं होती थी तो बिजली से चलने वाले कुओं वाले नजदीकी खेत में शाम को लोग एकत्रित होते थे और प्रोजेक्टर देखते थे। टेप रिकार्डर से गीत भी सुनाता था। बाँधेली गोपियों के सन्देश व पुकार टेप रिकार्डर में भरकर (रिकार्ड करके) बाबा के पास ले जाकर सुनाता था। उसके बदले में बाबा का सन्देश और आदेश ले जाकर बान्धेली गापियों को सुनाया करता था।

### लौकिक सेवा में अलौकिक सेवा

साइकिल के पीछे टेप रिकार्डर बाँध लेता था और कंधे पर प्रोजेक्टर लटकाता था। सेवा में बहुत मज़ा आता था। बाबा की शक्ति मिलती थी और लोगों की दुआएँ मिलती थीं। प्रात: 9:00 से सायं 4:00 बजे तक सरकार की नौकरी करता था और इसके बाद रूहानी सेवा करता था। जब मैं सेकेण्डरी के विद्यार्थियों का इम्तिहान सरकारी खर्चे पर मार्च अप्रैल में लेने जाता था तो प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर तथा निमित्त टीचर को भी साथ ले जाता था। इस प्रकार मैं लौकिक कार्य को भी अलौकिक सेवा का साधन बना लेता था। मेरी युगल को और मेरे को बाबा, समस्या समाधान के लिए जहाँ-तहाँ भेजा करते थे। सन् 1966 में हम दोनों जबलपुर में गए। हमने 3 दिनों तक वहाँ सेवा की। प्रदर्शनी समझाने से पहले एक घण्टा योग में बैठते थे। बाबा ने पत्र द्वारा अथॉरिटी दी कि जो भी सेन्टर थोड़ा कमजोर हो वहाँ मेरे से बिना पूछे भी जाकर सेवा करो। जहाँ-जहाँ मेरी बदली होती थी, वहाँ-वहाँ सेवाकेन्द्र खुल जाता था।

### कर्मपाश से मुक्ति

हम सभी परिवार के सदस्य ईश्वरीय सेवा में मस्त हो गए। पिताजी गाँव में रहते सेवा करते थे। मैंने प्यारे बाबा से कहा कि अब मैं पिताजी को गाँव से मुक्त करना चाहता हूँ। बाबा ने कहा, ज़मीन बेच दो। एक साल बाद बाबा ने कहा, रुक जाओ। इसके एक साल बाद बाबा ने कहा, तुरन्त बेचो। मैंने बाबा को लिखा, बाबा, उस समय तो पैसे ज़्यादा मिलते थे, अब थोड़े मिल रहे हैं। बाबा ने उत्तर लिखा, बच्चे, प्यारे लाल का उस समय ज़मीन में मोह था, अब नष्ट हो गया है, इसलिए बाबा ने ऐसा कहा। गाँव छोड़ने से एक साल पहले हमारे लौकिक सम्बधियों ने हमारा बहुत विरोध किया था। प्यारे बाबा ने उन सभी संबंधियों के कर्मपाश से मुक्त करके हमें उड़ता पंछी बना दिया।

सन् 1966 में हरियाणा, पंजाब से अलग हो गया, मैंने मुख्याध्यापक के पद के लिए इन्टरव्यू दिया। बाबा को जब मिला तो बाबा ने मुझे मुख्याध्यापक बनने से पहले एक लकड़ी का कलमदान तथा दो शीशे की दवातें दी। दिसम्बर 1968 में मैं जिला हिसार, गाँव कालीरावण में मुख्याध्यापक नियुक्त कर दिया गया। प्यारे बाबा को मैंने सूचना दे दी। बाबा ने पत्र लिखा, आपके गांव का नाम बहुत बढ़िया है, रावण काला ही होता है। ❖

# मन को हर्षाने वाली यादें

• ब्रह्माकुमारी चन्द्रा, लैगास (अफ्रीका)

चन्द्रा बहन, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी चन्द्रमणि जी की बहन की पुत्री हैं। सन् 1936-37 में जब ओम मण्डली की शुरूआत हुई तो आप मात्र 8 वर्ष की थीं। इतनी छोटी आयु में भगवान का बनने की अटूट लगन लग गई परन्तु पारिवारिक बंधन इस लगन के आगे बाधक बनने गये। सांसारिक सितमों को सहन करते हुए भी आप प्रभु-प्रेम को कैसे हृदय में संजोए रहीं, यह प्रेरणादायी कहानी आप ही के शब्दों में प्रस्तुत है.. – सम्पादक

जब सिन्ध, हैदराबाद में ओम मण्डली की शुरूआत हुई तो दादी चन्द्रमणि जी का सारा परिवार ईश्वरीय ज्ञान में चल पड़ा। उनके पिता रत्नचन्द जी तथा माता सीता, रिश्ते में मेरे नाना-नानी थे। मेरे पिता का घर उनके घर के पास ही था पर मैं ज्यादा समय नानी के घर में ही रहती थी। दादी चन्द्रमणि रोज़ शाम को ओममण्डली में जाती थीं, उनके साथ मैं भी जाने लगी। ईश्वरीय ज्ञान इतना मनभावन लगा कि दिन-रात उसी की लगन में रहने लगी। बाबा के घर में शाम को लगभग डेढ़ घण्टा क्लास चलती थी। पहले ओम की धुनी लगती थी, धुनी लगते ही सब साक्षात्कार में चले जाते थे। बाबा सामने सन्दली पर बैठते थे, मम्मा भी सामने आकर बैठ जाती थी। उन दिनों 50-60 भाई-बहनें आने लगे थे ओम मण्डली में। साक्षात्कार में ब्रह्मा बाबा, श्री कृष्ण के रूप में दिखाई पड़ते थे तो कई उनका हाथ पकड़ लेते थे, कई साथ में रास-मगन हो जाते थे। यही तो भागवत् प्रसिद्ध सच्ची गोपियाँ थीं जो देह की सुध-बुध भूल प्रभु-प्रेम में रम जाती थीं।

### दृष्टि पड़ते ही हुई अशरीरी

मेरा अलौकिक जन्म प्यारे बाबा की दृष्टि से हुआ। जब बाबा (ब्रह्मा तन द्वारा शिव बाबा) की दृष्टि मुझ पर पड़ी तो मैं गुम हो गई, जैसे कि शरीर में हूँ ही नहीं। घर में दादाजी तथा पिताजी का विरोध होने के कारण मैं इंतज़ार करती थी कि कब पिताजी क्लब में जाएँ और मैं ओम मण्डली में जाकर प्रभु मिलन का रसपान करूँ। प्रभु की उस अलौकिक मस्ती में कई बार तो चप्पलों और फ्राक की भी सुध नहीं रहती थी और उल्टी फ्राक, उल्टी चप्पलें पहनकर भी दौड़ जाते थे। एक दिन पिताजी क्लब से जल्दी आ गए, मेरे छिपकर जाने के बारे में उन्हें पता चल गया। घर आई तो बहुत मार पड़ी पर प्रभु-प्रेम में मीरा ने तो ज़हर का प्याला भी पी लिया था, मुझे भी मार की कोई परवाह नहीं थी। मुझे तो बस ईश्वरीय प्रेम की ही खींच थी।

### आबू जाने की छुट्टी मिली

बाबा जब कराची चले गए तो हम नाबालिग, ईश्वरीय ज्ञान बिन, बिना पानी की मछली की तरह तड़पने लगे। एक दिन मैंने हिम्मत की, सुबह छह बजे तांगे में बैठ रेलवे स्टेशन पहुँच गई। प्रतिदिन मिलने वाली खर्ची को जोड़कर मैंने जो पैसे इकट्ठे किए थे, उनसे टिकट खरीदी। ट्रेन आने में केवल आधा घण्टा शेष था। मैं वेटिंग रूम में बैठ गई, पर ड्रामा ने ऐसा मोड़ खाया कि लौकिक पिताजी सामने आ खड़े हुए। पूछा, कहाँ जा रही हो? मैं चुप रही। फिर तो मुझे घर खींच ले गए, बहुत मार भी पड़ी। फिर मुझ पर शादी करने के लिए दबाव पड़ने लगा। मैंने साफ इंकार कर दिया। उन्होंने मुझे बिना बताए, बिना दिखाए मेरी

मंगनी कर दी। पता चला तो मैं आँसू बहाती रही, कर कुछ नहीं सकी। एक मास के अन्दर ही मैं विलायत चली गई। युगल सांसारिक बातों का बहुत शौकीन था पर मेरा जीवन वैरागी ही रहा। मैं न बाबा को भूली, न बाबा के प्यार को। मैंने अपना कनेक्शन बाबा से जोड़े रखा। पोस्ट से मेरे पास विलायत में भी मुरली, याद-प्यार की टेप और टोली का छोटा टुकड़ा पहुँचता रहा। पाँच साल बाद विलायत से भारत में कोलकाता आए, ससुराल का परिवार वहाँ था। मेरी नानी सीता माता तथा हृदयपुष्पा दादी (मौसी) ने मेरे युगल से कहा, हमें आबू में लेकर चलो। मेरे ससुर से जब युगल ने जाने की इज़ाज़त मांगी तो उन्होंने कहा, भले जाओ पर चन्द्रा को मत ले जाना। युगल ने कहा, मैं अपनी मौसी सास और नानी सास से खुलकर कैसे बातचीत करूँगा, यह बीच में रहेगी तो अच्छा रहेगा, एक दिन जाएंगे, दूसरे दिन लौट आएंगे। फिर तो हमको छुट्टी मिल गई। नानी के आगे भी उन्होंने यही शर्त रखी कि मैं एक दिन से ज्यादा नहीं रुकूँगा। नानी ने कहा, ठीक है।

### बाबा ने बहुत ख़ातिरी की

हम आबू पहुँचे। उस समय संस्था कोटा हाऊस में थी। जब हम कोटा हाऊस पहुँचे तो मैंने हृदयपुष्पा जी से कहा, आप इन्हें (युगल को) नीचे सामान के साथ खड़ा रखो, मैं बाबा से मिलकर आती हूँ। बाबा को समाचार मिल गया था हमारे आने का। वे कमरे से निकलकर सीढ़ियों पर आकर खड़े हो गए थे। मैं दौड़कर सीढ़ियाँ चढ़ीं। बाबा को सामने देख खुशी का पारावार नहीं था क्योंकि बरसों से बिछड़े बच्चे को बाप मिला था। मैंने दौड़कर बाबा को कसकर भाकी पहन ली (गले लग गई)। ऐसी बाबा को चटक गई जो बाबा ने कहा, बच्ची, बूढ़ा बाबा गिर न जाए। मेरी आँखों से गंगा-यमुना बह रही थी। फिर बाबा ने कहा, बस बच्ची, युगल देखेगा तो क्या कहेगा कि यह बाबा को ऐसा क्यों चटकती है? इतने में वे सब भी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गए। युगल बाबा के पाँव पड़ा। बाबा ने उठाकर गले लगाया और कहा, बच्चे, बच्चे बाप को पाँव नहीं पड़ते हैं, गले लगते हैं। इस बात से उनके मन में बाबा के प्रति बहुत प्यार पैदा हुआ, पिघल गया अन्दर से। फिर बाबा ने कहा, बच्चे, बाप के घर आए हो, एक दिन रहने से कैसे चलेगा, अभी और रहो। फिर उसने टिकट कैंसिल करा दिया। बाबा ने उसकी बहुत ख़ातिर की। मुझे कहा, बच्ची, इस बच्चे को सुबह जल्दी मत उठाना, पर अगले दिन सुबह 4 बजे वे स्वयं आकर योग में बैठ गए मम्मा-बाबा के सामने। मैं देखकर हैरान हो गई। लेकिन यह बाबा की टचिंग थी जो आठ बजे उठने वाला, चार बजे उठ गया। फिर बाबा ने भोजन बनाने के निमित्त बच्चों को कहा, बच्चे से पूछो, क्या खाएंगे? बाबा ने यह भी कहा, बच्चे को इतना अच्छा-अच्छा बनाके खिलाओ जो इसे नानवेज याद न आए।

### मम्मा से पूछे सवाल

फिर मेरे युगल ने एक दिन मम्मा से अप्वाइंटमेंट ली और बात की। मम्मा से पूछा – मम्मा, युगल को बहन कैसे कहूँ? मम्मा ने कहा – कहने की बात नहीं है, समझने की बात है। फिर मम्मा ने पूछा – आपको किसने पैदा किया? बोला – भगवान ने। मम्मा ने पूछा – वह तुम्हारा कौन हो गया? बोला – बाप। फिर मेरे से पूछा – आपको किसने पैदा किया? मैंने कहा – भगवान ने। फिर पूछा – भगवान तुम्हारा क्या हो गया? मैंने कहा, बाप। तब मम्मा ने प्यार से समझाया कि जब दोनों को ही भगवान ने पैदा किया, दोनों ही भगवान के बच्चे हो तो आपस में कौन हो गये? मम्मा की बात सुनकर वह चुप हो गया। फिर एक और सवाल पूछा – मम्मा, पुराने समय से ही, दुनिया में सभी बच्चे पैदा करते आए हैं, यह कोई बुरी बात तो नहीं है? मम्मा ने कहा, उस समय भगवान धरती पर थोड़े आया था, अब आया है तो उसने पवित्रता का आर्डिनेन्स निकाला है। उनकी बात हमें माननी चाहिए ना! फिर मम्मा ने हमें पाँचों उंगलियाँ और अंगूठा दिखाकर कहा – यह अंगूठा है काम विकार का

प्रतीक और शेष चारों उंगलियाँ – क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार को इंगित करती हैं। मम्मा ने कहा – जब तक अंगूठे अर्थात् काम को वश में नहीं किया है तब तक शेष चार विकार, वश में हो नहीं सकते। मम्मा की बातें बड़ी प्रभावशाली व दिल को लगने वाली थी। मम्मा की बातों से काफी संशय उनके मिट गए और यज्ञ से प्रेम जुट गया। फिर वे अपनी इच्छा से तन, मन, धन का सहयोग देने लग गए।

तीन दिन हम कोटा हाऊस में रहे। युगल को बाहरी दुनिया का कुछ भी याद नहीं आया। बहुत प्रभावित होकर लौटा। बाबा के प्यार ने बहुत खींच लिया। जब घर पहुँचा तो माँ के गले लगा। माँ ने कहा, आज क्या बात है जो तुम गले लगते हो? तो बोला, मेरे को बाबा ने कहा है कि माँ-बाप के पाँव नहीं पड़ते, गले लगते हैं।

### ग़लतफहमी दूर कर दी

हमारे युगल ने संसारी लोगों से सुना था कि ब्रह्माकुमारियों के पास जादू का सुरमा होता है। आबू में उन्होंने एक बहन को कहा, मुझे थोड़ा सुरमा दो। बहन ने दे दिया। उस सुरमे को घर में ले आया और अपनी माता, भाभी आदि सबको दिया, यह कहकर कि बहुत अच्छा है, मैं इसे बाज़ार से खरीदकर लाया हूँ। तीन दिन बाद उन्होंने सबसे पूछा, सुरमा कैसा रहा? सभी ने कहा, अच्छा है, ठीक है। तो बोला, यह सुरमा मैं आबू से खास लाया था, देखो, आपने डाला पर कुछ नहीं हुआ, तो फिर 'सुरमे में जादू है' यह बात क्यों बेवजह उड़ा रखी है? इस प्रकार, सुरमे के बारे में जो ग़लतफहमी घर में फैली थी, उसको उन्होंने प्रमाण दिखाकर खत्म कर दिया।

एक बार सरला बहन (अहमदाबाद) पण्डा बनकर हमको मधुबन लाई। उस समय पाण्डव भवन तैयार हो गया था। हवाई महल बन रहा था। युगल को बहलाने के लिए बाबा उसके साथ रम्मी, बैडमिंटन खेलते थे। उनको बहुत बिज़ी रखा। बहुत सौगातें दिखाई और कहा, बच्चे, बाप के घर आए हो, जो चाहिए लो। उसने कहा, मुझे सौगात नहीं चाहिए, आपसे मिलना ही सौगात है। फिर बाबा ने उसको पिस्ते का डिब्बा दिया, कहा, बच्चे, यह तो लो। वो ले लिया और दिल ही दिल में बाबा के प्रति पिता के प्यार से कृतज्ञ हो गया। यज्ञ उसे अपना घर लगने लगा। यज्ञ में जिस भी चीज़ की कमी देखता था उसे पूरा करने की भावना उठने लगी और पूरा करता गया। बाबा के प्यार ने ही युगल का कदम-कदम पर भाग्य बनवाया। बाबा जिस बच्चे में जो विशेषता देखते थे, उसी के आधार पर उसे आगे बढ़ा देते थे।

सन् 2006 में युगल ने शरीर छोड़ दिया। मैं बंधनमुक्त हूँ, नाममात्र कुछ समय घर में रहती हूँ। शेष तो मधुबन में ही बापदादा से मिलन में समय सफल होता है।

ईश्वरीय ज्ञान में तीन बातों ने हमें बहुत मदद की है –

**1. अमृतवेला –** चाहे मैं कहीं भी हूँ, सफर में, होटल में, किसी रिश्तेदारी में – ठीक चार बजे बिस्तर छोड़कर बाबा की याद में जरूर बैठती हूँ। मैं अमृतवेले प्रभु से मिलन मनाकर उनसे शक्तियाँ अवश्य प्राप्त करती हूँ। यह नियम भंग हो नहीं सकता।

**2. खान-पान की शुद्धि –** बाबा के बताए नियम प्रमाण, बाबा की याद में बनाये गए शुद्ध-सात्विक भोजन को ही ग्रहण करती हूँ। अनुकूल वातावरण न हो, तो फल खा लेती हूँ। भले ही उपवास करना पड़े पर नियम विरुद्ध राजसिक या तामसिक भोजन कभी ग्रहण नहीं करती।

**3. प्रतिदिन मुरली का पठन-पाठन –** ईश्वरीय शिक्षाओं से भरी मुरली मैं सदा अपने साथ रखती हूँ। सफर में स्वयं पढ़ लेती हूँ, नहीं तो बाबा के सेवाकेन्द्र पर जाकर सुन लेती हूँ पर कोई मुरली क्लास मुझसे छूट नहीं सकती। इन तीन नियमों ने मुझे बहुत ईश्वरीय बल प्रदान किया है।

साकार बाबा के नज़ारे तो आँखों के सामने घूमते रहते हैं। बाबा मुख में गिट्टी डालते थे, झूले में बिठाते थे – ये सब बातें याद आती हैं और हम यादों में खोए-खोए हर्षित रहते हैं। ❖

# याद आते हैं वे दिन

• ब्रह्माकुमार सूर्य, माउंट आबू

बाल्यकाल से ही ब्रह्माकुमार सूर्य जी के जीवन पर प्राचीन ऋषि-मुनियों की छाप थी और भविष्य में महान ऋषि बनने के चित्र ही आपके मानस पटल पर उभरा करते थे। आपका जन्म एक अत्यंत साधारण किसान के घर हुआ, बचपन से ही पढ़ाई के सिवाय अन्यत्र कहीं भी अनुराग नहीं था और संन्यास के संस्कार जीवन में स्पष्ट देखे जा सकते थे। केवल 12 वर्ष की अबोध आयु में आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत की प्रतिज्ञा कर ली थी और केवल धर्म के लिए ही जीवन समर्पित करने का मन बना लिया था। आपके अंदर मौजूद पवित्रता के निर्मल संस्कारों को पानी मिला प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा जहाँ स्वयं भगवान नवयुग निर्माण का कार्य कर रहे हैं। सन् 1964 में आपको राजयोग की एक छोटी-सी पुस्तिका के द्वारा दिव्य प्रकाश प्राप्त हुआ। पुस्तक में लिखे अनुसार ज्यों ही आपने योग-अभ्यास किया, आपको अलौकिक बल का आभास हुआ और अनुभव हुआ कि इस योग-अभ्यास द्वारा संपूर्ण ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा को पूर्ण करना सरल होगा। यहीं से प्रारंभ हुई भगवान के साथ आपकी सुखद यात्रा। आप पिछले 40 वर्षों से मुख्यालय में ही समर्पित रूप से सेवायें दे रहे हैं। योगयुक्त होकर भोजन बनाने वाले आप भगवान के योगीराज बच्चे हैं। आप देश-विदेश की लाखों आत्माओं की सेवा में अहर्निश व्यस्त रहते हैं। साकार ब्रह्मा बाबा से प्रथम मिलन के अलौकिक स्पन्दन की गाथा प्रस्तुत है आप ही की लेखनी द्वारा ... सम्पादक

ज्यों-ज्यों ट्रेन आबू के समीप आ रही थी, मन अन्तर्मुखता की गुफा में आनन्द-विभोर होता जा रहा था.. अहा! भगवान से मिलन होगा, कैसा लगेगा? पता नहीं वे हमें प्यार करेंगे भी या नहीं.. ब्रह्मा बाबा कैसा होगा.. क्या हम उनके तन में आते हुए शिव बाबा को देख पायेंगे.. कितना तेज होगा उनके ललाट पर.. उनकी वाणी में क्या होगा.. इस प्रकार की मन की तरंगें अलौकिक सुख का अनुभव करा रही थी।

**हे पर्वतराज! तुम भी धन्य हो**

सुबह 5.30 बजते ही आबू की पवित्र पर्वत शृंखलाएँ दृष्टिगोचर होने लगी। पर्वत के दर्शन करके भी मन शांत होने लगा। ओह! भगवान इस गिरिराज पर अवतरित हुए.. हे पर्वतराज! तुम भी धन्य हो, तुम पर विश्व स्रष्टा के कदम पड़े.. यदि तुम

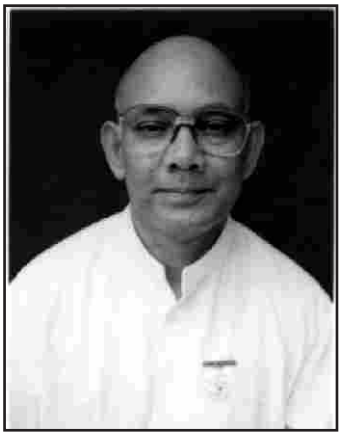

चेतन होते तो तुम अपने भाग्य पर कितना इतराते.. पर क्यों चुना उस प्राणेश्वर ने तुम्हें.. क्या तुम भी उससे बहुत प्यार करते थे..हाँ, सुना तो है कि तुम्हारे आँचल में अनेक ऋषि-मुनियों ने तप किया है। तब तो तुम भी पवित्र हो और पवित्रता के सागर को आकर्षित करने में सक्षम हो।

हम पहुँच गये मधुबन के उस अलौकिक प्रांगण में जहाँ प्रजापिता ब्रह्मा व निराकार परमपिता विचरण करते थे। उस समय गाड़ियाँ तो आश्रम में नहीं होती थीं। बस स्टैण्ड से सामान बैलगाड़ी द्वारा आया और हम पैदल पाण्डव भवन पहुँचे। पहुँचते ही यह देखकर मन गद्गद् हो उठा कि अपने कक्ष के बाहर एक वाणों की खाट (रस्सियों की चारपाई) पर बाबा पद्मासन लगाये बैठे थे और कह रहे थे, आओ बच्चे आओ ..।

### दिल चाहता था कि उन्हें देखता ही रहूँ

मैं तो उन्हें देखता ही रह गया। अति अलौकिक आकर्षक व्यक्तित्व .. आँखें उन पर से हटने का नाम ही नहीं ले रही थीं.. मन तृप्त ही नहीं हो रहा था.. दिल चाहता था कि उन्हें देखता ही रहूँ.. अच्छा, तो ये हैं वो महान हस्ती जिसे भगवान ने अपना भागीरथ बनाया.. यही है वो महान आत्मा जो सृष्टि के आदि में श्री कृष्ण थी, जिसे लोग भगवान से कम नहीं मानते। हो भी क्यों न.. उन्होंने अखण्ड तप के बल से स्वयं को परमात्मा-सम ही तो बना दिया था।

### बाबा को सदा योगस्थ ही देखा

हम सात दिनों तक बाबा के साथ रहे। हमारा कमरा, बाबा के कमरे के सामने ही था, उस इमारत का नाम है हवाई महल। हम देखते थे कि बाबा रात को अपने कमरे के बाहर चारपाई पर मच्छरदानी के अंदर योगयुक्त अवस्था में पद्मासन पर बैठे हैं और जब सुबह उठते थे तो तुरंत बाबा को देखने बाहर आते थे और बाबा को उसी योग की मुद्रा में बैठा देखते थे। बाबा हमारे बाद सोते थे व पहले उठ जाते थे। हम यदि सवेरे तीन बजे भी उठे तो भी बाबा को योगस्थ ही देखा।

### ईश्वरीय तरंगों का प्रवाह

मुरली से हमारा बहुत प्यार था। हम प्रात: 5.30 बजे से ही हिस्ट्री हॉल में योग के लिए जा बैठते थे। बाबा ठीक 6.10 पर क्लास में प्रवेश करते थे, उसमें क्षण-भर का भी विलंब नहीं होता था। एक महत्त्वपूर्ण बात जो हम रोज़ देखते थे, वो थी कि जैसे ही बाबा ने हॉल में प्रवेश किया तो मानो पूरा हॉल ईश्वरीय तरंगों से, मैं कहूँगा कि पावरफुल करंट से ऐसा भर जाता था कि सभी का अन्तर्मन जागृत हो जाता था। बाबा का आना जैसे कि विशाल लाइट हाऊस का प्रवेश करना था।

बाबा को हम चलते-फिरते भी देखते थे। सवेरे जब उनके तन में परमात्म-अवतरण होता था, तब का उनका स्वरूप और जब वे सारा दिन दिखाई देते थे, तब का उनका स्वरूप भिन्न दिखाई देता था। हमारा जन्म आर्यसमाजी परिवार में हुआ था और वहाँ परमात्मा के अवतरण को नहीं माना जाता। परंतु, इन सभी अनुभवों से मेरी बुद्धि ने स्वीकार कर लिया था कि बाबा के तन में भगवान आते हैं, ज्ञान सुनाते हैं और अपने परमधाम चले जाते हैं।

एक अति सुंदर दृश्य जो मेरे मन पर बाबा की निरहंकारिता की छाप छोड़ गया था, आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमारा ग्रुप बाबा के कक्ष के बाहर खड़ा था। बाबा बनियान व निक्कर पहनकर हाथ में पानी का लोटा लिए शौच अर्थ जा रहे थे। यह शाम का समय था। हम सबको देखकर वे रुक गये, सभी से बातें करने लगे, प्यार देने लगे। मैं खड़ा-खड़ा मानो समाधिस्थ हो गया..ओह, कितना निरहंकारी है हमारा बाबा.. हम छोटी-छोटी बातों का अहंकार रखते हैं और वे संसार की सर्वोत्तम आत्मा होते हुए भी, एक महान तपस्वी होते हुए भी अपना सर्वस्व त्याग करके भी कितने नम्र हैं। अहंकार का तो मानो उनसे किसी भी जन्म का नाता न हो।

### उन्हें भविष्य का बहुत नशा था

हम अतीन्द्रिय सुख में मगन होते रहे। वे दिन जीवन की यादगार बन गये। सन् 1968 की बातें हैं। बाबा अपनी संपूर्णता के समीप थे। इस धरा पर वे पूरे कल्प की यात्रा पूर्ण कर रहे थे। उन्हें अपने भविष्य का बहुत नशा था। हम उनसे तीन बार मिले। दो बार ग्रुप के साथ और एक बार पूरी तरह पर्सनल।

व्यक्तिगत मिलन तो अनुपम था। बाबा ने पूरा परिचय पूछा। एक पिता की तरह सब कुछ पूछा। हमने समर्पित होने की इच्छा व्यक्त की और तब बाबा ने दृष्टि दी। दृष्टि पाकर मैं विदेही हो गया, न जाने कहाँ खो गया। यही दृष्टि मेरे लिए वरदान बन गई। फिर बाबा ने सौगात दी।

जाते समय बाबा ने हम सबको एक-एक करके गले लगाया, बादाम-मिश्री खिलाई तथा रूमाल हिलाकर विदाई दी और कहा, बच्चे, गो सून

कम सून *(Go Soon, Come Soon)* अर्थात् जल्दी आना। हम आबू अब्बा के घर से वापस आ तो गये परंतु मन को वहीं छोड़ आये। चित्त पर एक-एक दृश्य इतनी गहनता से अंकित हो गया था कि भूले नहीं भूलता था। मन बार-बार कहता था कि आबू में भगवान आया है, तू यहाँ दुनिया में क्या कर रहा है, चल वहीं चल, यह संसार तेरे रहने के योग्य नहीं है। मैं दिल्ली से हर हफ़्ते एक पत्र बाबा को लिखता था, आखिर मेरे दिल की आवाज़ उन्हें पहुँची और उन्होंने मुझे स्वीकार कर लिया, मैं समर्पित हो गया।

### बाबा की महानताएँ

बाबा जब बच्चों के साथ पहाड़ी पर जाते थे तो बीच-बीच में खड़े होकर, पीछे मुड़कर, अत्यंत रूहानी नशे से राजाओं की तरह बोलते थे – हाँ बच्चे, किसके साथ चल रहे हो? नशा है? बाबा के नयनों से व चेहरे से झलकता नशा देखकर सभी स्वमान में मगन हो जाते थे।

यज्ञ का बेगरी पार्ट ऐसा था कि कोई भी मनुष्य चिंतित हुए बिना नहीं रह सकता था। जब ऐसी समस्या आती है तो मनुष्यों की कितनी दयनीय दशा होती है, हम सुनते व देखते हैं। मनुष्यों का हाल बेहाल हो जाता है, वे लज्जा के मारे बाहर भी नहीं निकलते। परंतु बाबा के चेहरे पर चिन्ता की एक भी सिकुड़न नहीं थी। शिव बाबा पर ऐसा विश्वास व स्वयं की विजय में ऐसा नशा.. अनेक बच्चों के यज्ञ को छोड़कर चले जाने पर भी वही धैर्य, सचमुच कल्पना-सी लग सकती है परंतु यही सत्य है। एक बाबा की अडोलता सारे यज्ञ को अडोल बनाये रही।

कितना ध्यान था बाबा का अपनी योगयुक्त स्थिति पर। **जब बाबा बच्चों के साथ पिकनिक करते थे या खेल खेलते थे तो कहते थे, बच्चे, खेलकूद, खाने-पीने में मस्त होकर बाबा को न भूल जाना, नहीं तो बाबा कहेगा, देखा, खाने-पीने में इतने मस्त हो गये जो बाप को भी भूल गये। हर कर्म में बाबा को यह ध्यान रहता था कि शिव बाबा की स्मृति छूट न जाए।** तब ही तो वे सबसे महान योगी बने।

अन्तिम दिन..18 जनवरी 1969, जब प्रात: से ही बाबा को छाती में दर्द था तो दादी ने बाबा से पूछा, बाबा, डॉक्टर को बुलायें? तो बाबा का वही विश्व महाराजन की शान वाला उत्तर था, बच्ची, बाबा तो सुप्रीम सर्जन (भगवान) से बातें कर रहा है, डॉक्टर क्या करेगा? अत्यंत दर्द में इतनी ईश्वरीय खुमारी व श्रेष्ठ स्मृति स्वयं में एक महान उदाहरण है। ❖

### बाबा ने मुझे बनाया.. पृष्ठ 18 का शेष

सम्पर्क बढ़ता जा रहा है। बाबा का रूहानी बगीचा वृद्धि को पा रहा है, जिससे हरिनगर (दिल्ली) सेवाकेन्द्र के सम्बन्ध में, दिल्ली तथा दिल्ली के आसपास लगभग 43 ईश्वरीय सेवाकेन्द्र तथा उप-सेवाकेन्द्र खुले हैं। सेवा को आगे बढ़ाने के लिए विशेष गुलज़ार दादी जी की प्रेरणाएँ मिलती हैं तथा बाबा भी टचिंग कराते हैं। सेवा में सदा व्यस्त होते हुए स्वयं को सदा डबल लाइट अनुभव करता हूँ। बाबा के इशारे अनुसार मैं विशेष योग-साधना तथा मनन-चिंतन की गहराई बढ़ाने पर ध्यान देता हूँ। विशेष अमृतवेले उड़ती कला द्वारा योगाभ्यास में बाबा से शांति और शक्ति लेकर अनेक आत्माओं को देने का पुरुषार्थ करता हूँ। ब्रह्मा बाबा के तथा दादियों के ऊँचे आदर्शों को अपने जीवन में उतारने पर ध्यान देता हूँ। सदा यही लक्ष्य रहता है कि पालनहार बाबा ने जो हमें अनोखी पालना देकर दिव्य गुणों से शृंगार करके जीवन को श्रेष्ठ तथा सुन्दर बनाया है, वो पालना अन्य आत्माओं को देकर, उनका प्रभु से मिलन करा कर नई दुनिया के वर्से का उन्हें भी अधिकारी बनाएँ। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
**E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org**